वर्ष 39 अंक : 2
5.3.2016 शनिवार (मार्च-अप्रैल)
वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

प्रगट ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामिजी का 'भक्ति महोत्सव'!

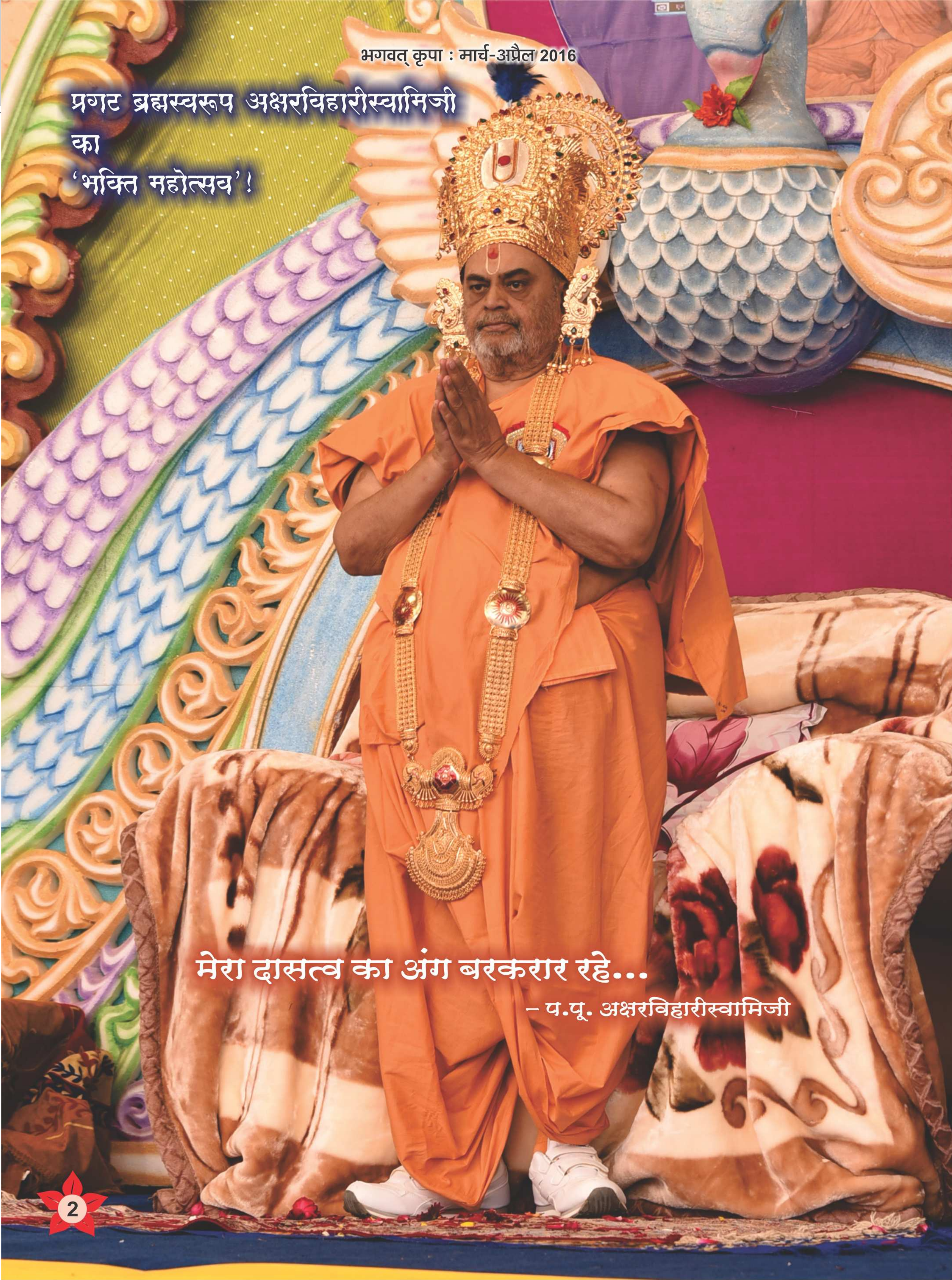

मेरा दासत्व का अंग बरकरार रहे...

– प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

हमारी चेतना के प्रहरी हमारे 'गुरुजी' के 79वें प्राकट्य पर्व पर...

भगवान स्वामिनारायण ने जिस प्रकार जूनागढ़ में **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी** जैसी दिव्य विभूति की भेंट देकर तत्कालीन समाज को अपने सच्चे संत का जोग दिया, उसी प्रकार दिल्ली का मुक्त समाज **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** का सदैव ऋणी रहेगा कि कोई साधन किए बिना उन्होंने कृपा करके-मौज में प.पू. गुरुजी जैसे, जीव के हितैषी संत की गोद में बिठा दिया। आज हमें अवसर मिला है अपने ऐसे सजग प्रहरी –**प.पू. गुरुजी के प्राकट्य पर्व** को मनाने का !

जन्मों के जड़ स्वभाव कहो या मायिकभाव के वश हम ऐसी दिव्य विभूतियों को उनके तात्त्विक रूप से पहचान नहीं पाते। सो,' दिव्य चक्षुनी नजरे तने जोउं, एवो बुद्धियोग तुं दे ने प्रभु...' अर्थात्– दिव्य चक्षुओं से आपको निहारूं, ऐसा बुद्धियोग प्रभु आप दे दो... 'गुणातीत ज्योत' में रचित भजन की इन पंक्तियों द्वारा प्रार्थना करें कि हे प्रभु ! अब हमारे जीवन में आपके सच्चे संत के सिवा अन्य कुछ भी विशेष-प्यारा ही न रहे। प.पू. गुरुजी जैसी विभूति का महिमागान करने से जीव तो बलवान होगा ही, लेकिन अब उनकी मरजी पर अमल करना हमारा जीवनध्येय बने। इस हेतु अब की बार **प.पू. दीदी** ने अपने प्राकट्य दिन –12 जनवरी को सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना करते हुए आशिष याचना की थी कि हम सभी मुक्त प.पू. गुरुजी के तात्त्विक स्वरूप को पहचान पाएँ। उसी का मनन-चिंतन करते हुए, हम सब यही प्रार्थना करके, सही मायने में प.पू. गुरुजी का 79वाँ प्राकट्योत्सव मनाएँ...

...मुझे याद है कि जब मैं नाइन्थ क्लास में पढ़ रही थी – तब अपनी एक फ्रेंड के साथ आई.एस.बी.टी. जाते हुए, 'पालना' – जहां छोटे अनाथ बच्चों को रख जाते हैं, वहाँ गई थी। मुझे तब तक गुरुजी नहीं मिले थे। सो, मेरे मन में ऐसी एक बात आई थी कि मैं इलेवन्थ तक या और आगे थोड़ा पढ़ जाने के बाद इस जगह पर आ जाऊंगी। मैंने दो-तीन लोगों से कहा भी था कि आगे जाकर मैं 'पालना' आश्रम में छोटे बच्चों को पाल कर सेवा करूंगी, मॅरेज नहीं करूंगी। भगवान ने ही यह सोच मुझे दी होगी...

जब मैं दसवीं क्लास में थी, हमारा परिवार उस दौरान यहां अशोक विहार में किराए की कोठी में शिफ्ट हुआ। उसी लाइन में गुरुजी भी किराए की कोठी में रहते थे। हमें 'स्वामिनारायण धर्म' के बारे में तो कुछ पता नहीं था। बस, एक बार जब प.पू. गुरुजी सेवक के साथ सड़क पर वॉक कर रहे थे, तब छत पर पढ़ाई करते हुए मैंने उनके दर्शन किए थे। हमारे साथ की कोठी में रहने वाली, मेरी ही हम उम्र रेनू दीदी अकसर मुझसे गुरुजी के बारे में बातें किया करती थीं। मैं सिर्फ ऐसे ही टाइम पास करने के लिए उसकी बात सुनती। **भगवान के प्रति मुझे विश्वास था, लेकिन साधुओं के प्रति नहीं !** और... ऐसे संत में भगवान प्रगट रह कर काम करते हैं, यह सोचना तो मेरे लिए खूब दूर की बात थी। हाँ, एक बार कॉलेज़ के एग्ज़ाम का अपना रिज़ल्ट जानने हेतु मैं **फोन करने के लिए मंदिर गई थी और तब मुझे जो सुकून मिला था, उससे गुरुजी के प्रति आस्था बनी थी...** करीब एक-डेढ़ साल के बाद मुझे सेवक ने बताया –

*एक बार आप छत से गुरुजी का दर्शन कर रही थीं, उसके बारे में मैंने गुरुजी को बताया था कि एक लड़की आपके दर्शन कर रही है। कोई नई - पंजाबी फॅमिली रहने के लिए आई है। यह सुन कर **गुरुजी** ने मुझसे फट् कहा था – **वह लड़की अपनी है और आगे जाकर सत्संग का खूब कार्य करेगी।***

मैं 17 साल की थी, रेणू दीदी के साथ मंदिर आकर कई सेवाओं में हाथ बँटाने लगी। और... गुरुजी ने काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेबजी, दिनकरभाई, सोनाबा, ज्योति बहन, प्रेम बहन-इन सबका दर्शन मुझे कराया-सबकी पहचान करवाई। मैं तो किसी को पहचानती नहीं थी। इसके साथ-साथ यह भी रहस्य है कि **हमें प्रभु ने पहली बार जहां जोड़ दिया होता है, वही हमारी साधना की शॉर्टेस्ट और इज़ीएस्ट राह होती है।** यह बात मेरे मन में प्रभु ने ही कृपा करके बिठा दी थी। जब इस रास्ते चलने के बारे में सोचा, उस समय मुझे यह भी पता नहीं था कि 'भगवान भजना' क्या होता है। लेकिन मैंने यह नोट किया था कि गुरुजी को लेडिज़ सेक्शन के साथ कम्यूनीकेशन करने में तकलीफ रहती थी। यहां की महिलाएँ स्वामिनारायण के संतों की मर्यादा के विषय में कुछ नहीं जानती थीं। सो, एकदम संतों के पांव छूने के लिए आ जातीं और गुरुजी को 'व्रत' हो जाता था; गुरुजी फिर पूरा दिन खाना नहीं खाते थे। उस समय मेरे मन में ऐसा नहीं था कि गुरुजी के रूप में मुझे भगवान का साक्षात् स्वरूप मिला है, पर, गुरुजी के प्रति एक आकर्षण जरूर हुआ था; सो मैंने सोचा कि मुझे वैसे भी कहीं सेवा ही करनी है, तो मैं अपना जीवन गुरुजी को ही समर्पित कर दूं और उन्हें हेल्पफुल बनूं...

धीरे-धीरे गुरुजी के प्रति इतना अटैचमेंट हो गया-मेरी चित्तवृत्ति उनसे ऐसी जुड़ गई कि मुझे ऐसा आभास होने लगा कि उनके बिना मैं जी नहीं पाऊंगी। यूँ, ऐसे हेत से – हेल्पफुल होने की भावना से यह जीवन शुरू हो गया था। पर, ये – भगवान का स्वरूप मेरी चेतना की पूर्णाहुति करने के लिए मेरे जीवन में आए हैं, यह एहसास बहुत समय के बाद हुआ। पहले से ही प्रभु की जरूर प्लानिंग होगी। उन्होंने कृपा करके मुझे यहां सेवा के लिए चुन लिया, वर्ना मैं तो 'पालना' आश्रम में चली गई होती !

सबसे पहले काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, गुरुजी और सारे गुणातीत स्वरूपों को खूब-खूब धन्यवाद कि मुझे उन्होंने यहां की सेवा दी है – मुझे इस सेवा में निमित्त बनाया है। 1982 में मैंने परमेनन्ट्ली घर छोड़ दिया। गुरुजी की निश्रा में करीब 34 साल हो गए हैं। गुरुजी तो अपनी गुणातीत साधुता से अपना स्वरूप छुपाए ही रखते हैं, ढके रखते हैं। सबका दिल भी गवाही देगा कि **ऐश्वर्य, प्रताप, चमत्कार दिखा कर किसी को एकदम इम्प्रेस कर लें, ऐसी जीवन शैली गुरुजी की कभी भी नहीं रही।** इसीलिए मुझे तो लगता है कि गुरुजी के असली तात्त्विक स्वरूप को - उन्हें तत्त्व से हम पहचान नहीं पाए हैं।
कई प्रसंग अनुभव करवाते हैं...

- शायद 2009 की बात है – 'गुनगुन' नाम की 2-3 साल की एक छोटी बेबी इंडिया गेट पर अपने माँ-बाप के साथ घूमने गई थी। उसे किसी ने किडनॅप कर लिया। गुरुजी को यह बात पता चली तो वे अनइज़ी हो गए। उनके फेस से भी यह लगता था। **करूणासभर ऐसे वे 'साधु हृदय' हैं।** जो भी आता उससे

पूछते – *गुनगुन का पता चला?* एक शाम हम सब सभा में आए, तो एकदम बोले – *चलो, गुनगुन मिल जाए इसके लिए धुन करते हैं।* हमने धुन की और अगले ही दिन वो बेबी मिल भी गई! शायद डर के कारण किडनॅपर उसे छोड़ गए थे... वैसे देखा जाए तो जिससे कोई परिचय तक नहीं, उसकी ऐसी फ़िकर! तो, हम जो उनके जोग में हैं, उनकी उन्हें कितनी फ़िकर रहती होगी और उनकी परवरिश करने में वे क्या कोई कमी छोड़ेंगे?

एक स्थूल दृष्टांत देती हूँ। 2014 के सितंबर में मुझे वायरल फीवर हुआ था। सो मैं मंदिर नहीं आयी ताकि दवाई वगैरह लेकर रेस्ट कर लूँ। गुरुजी ने सुनील भइया – जो मंदिर से बहुत करीब से जुड़े हुए हैं और जिनका सब्जी मण्डी में होलसेल का काम है, उन्हें फोन करके अच्छी मौसमी का एक कट्टा 'अक्षरज्योति' भिजवाने के लिए कहा। मुझे तो इस बारे में कुछ पता ही नहीं था। पर, सुनील भइया का मुझे फोन आया – *दीदी, मैंने जो मौसमी भिजवाई हैं, वे अच्छी व स्पेशियल क्वॅालिटी की हैं, गुरुजी ने खास आपके लिए मंगाई है! आप ज्यूस जरूर लेना।* सुनील भइया तो फोन पर बात करते-करते एकदम रो भी पड़े – *दीदी, **ऐसा नहीं लगता कि ऐसा बाप धरती पर और कहां मिलेगा?***

प्रसंग छोटे-छोटे हैं...

- थोड़े दिन पहले नवंबर में जगरांव से अशोकजी का परिवार आया था। उनके यहां गुरुजी अकसर ठहरते हैं। वे जब यहां आते हैं तब प.पू. गुरुजी को 500 रुपये देते हैं और लौटते हैं तब भी 500 रुपये देते हैं। दूसरे दिन उन्हें जगरांव के लिए सुबह जल्दी ही निकलना था। गुरुजी ने मज़ाक में सेवक से कहलवाया – *आप तड़के 5 बजे चले जाओगे, 500 रुपये देने तो रह जाएँगे; मेरे 500 रुपये तो गए!* उन्होंने कहलवाया – *ट्रैफिक न मिले, इसलिए इतनी जल्दी निकलना है।* गुरुजी ने कहलवाया – *फिर मैं सुबह 5 बजे बैठा मिलूँगा, आप 500 रुपये देकर जाना।* आपके लिए चाय भी बनवा कर रखूंगा। मैंने रात को ही कहलवाया – *वे अभी ही आपको 500 रुपये भिजवा रहे हैं।* जाड़े के दिन थे, सो अशोकजी ने भी सोचा कि इतनी ठण्ड में गुरुजी उनकी वजह से जल्दी न उठें। गुरुजी ने तो कहलवा दिया – *नहीं-नहीं अब तो पक्का हो गया, 500 रुपये सुबह 5 बजे ही लूंगा।* अगले दिन जब तड़के अशोकजी परिवार सहित जगरांव के लिए निकल रहे थे, तो पौने पांच बजे से गुरुजी बाहर ही सोफे पर बैठे हुए थे। उन्होंने अशोकजी को चाय-बिस्कुट खिलवाए। उन्हें 500 रुपये से कोई लेना-देना नहीं। पर, ऐसी गरज दिखाते हैं कि मानो हमारी सेवा देने से ही सब चल रहा है। पूरे रास्ते गुरुजी को ठण्ड में सोफे पर बैठे हुए याद करते-करते – उसी मनन-चिंतन में ही वे जगरांव पहुंचे। दिल्ली से तकरीबन 5 घंटे का रास्ता है। जगरांव पहुँचते ही फोन करके दुःखी होते हुए आदर्श भाभी ने मुझसे कहा – *गुरुजी तो कमाल करते हैं, हमें भी पता है कि हमारे 500 रुपये से मंदिर का कोई कारोबार चलने वाला नहीं है, लेकिन वो बैठे थे।*

मैंने समझाया – *बस, **हमें लाड़ लड़ाने का गुरुजी का यही परिश्रम** याद रखने जैसा है। हम यह **याद भी रखेंगे, तो उसे भी वे बहुत ज़्यादा मान लेंगे...***

इतने सालों के बाद आज हमारे मन में इतना तो दृढ़ हो ही जाना चाहिए कि गुरुजी को हमसे कोई स्वार्थ नहीं है। **उन्हें पर्सनली तो अपने लिए कुछ ज़्यादा जरूरत नहीं है। हमारे ही लिए उन्होंने यह सारा कारोबार खड़ा किया हुआ है–फैलाया है। प.पू. स्वामिजी** तो अकसर अपनी बातों में कहते हैं – ***साधु हितकारी है, मंगलकारी है।*** जाग्रत अवस्था की तो बात ही जाने दो, सपने में भी वे हमारा भला ही सोचेंगे। ऐसे गुणातीत साधु हमें मिल गए हैं।

- आप सबने देखा है कि एक-दो साल से गुरुजी गले में एक माला ड़ालते हैं। शिकागो से आए पिन्टुभाई को भी गले में माला पहनने के लिए बोल कर, प.पू. गुरुजी ने 24 दिसंबर 2014 की सुबह फिक्स्ड टाइम धुन से पहले, करीब 6:32 को सहज ही उन्हें बताया –

  तूने माला गले में पहनी हो, तो तुझे एक कॉन्सियसनेस रहेगी कि हम साधक हैं-हमें हमेशा भजन का उपाय लेना है।

  यह वाक्य खूब हमें अंतर्दृष्टि कराता है कि साधुता की पराकाष्ठा, मुक्तों के प्राणाधार और प्रभुधारक संत होने के बावजूद, गुरुजी खुद को साधक मान कर साधक की तरह ही वर्तते हैं। प.पू. स्वामिजी के शब्दों में **'भजनिक गुरुजी'** एक साधक की अदा से अब भी कई बार रात-रातभर भजन करते हैं। अभी अक्टूबर की बात है, सायं सभा के बाद, रात को करीब पौने नौ बजे 'अक्षरज्योति' से निष्ठा दीदी का अभिषेक को मॅसेज़ आया कि गुरुजी की माला थोड़ी ढीली हो गई है। वो मुझे भिजवा दो, मैं टाइट बाँध कर सुबह भेज दूंगी। **गुरुजी के लिए कोई चीज़ बनानी, मतलब बहुत परफॅक्ट और कॅयरफुली बनानी पड़ती है। माला भी सिर्फ पिरो कर नहीं दे सकते। उसमें गांठे भी ठीक से लगी होनी चाहिए, गॅप भी एक जैसा होना चाहिए।** अभिषेक ने जैसे ही यह मॅसेज़ गुरुजी को दिया, तो उन्होंने छोटे बच्चे की तरह माला को एकदम कस कर पकड़ लिया और फट् से बोले –

  मेरी माला ! तो मैं रात को क्या करूंगा ? यह माला तो मुझे रात को चाहिए होती है।

  अभिषेक ने निष्ठा दीदी को यह मॅसेज़ दिया। फिर निष्ठा दीदी ने कहलवाया कि गुरुजी से कहिए कि *अभी ग्यारह बजे तक तो आप बैठे रहते हैं! तो, अभी दो घंटे में माला ठीक करके भिजवा दूंगी।* इस शर्त पर उन्होंने माला ठीक करने के लिए भेजी। मैं वहां बैठी यह सब देख रही थी। रात को माला किसके लिए घुमाते होंगे, किसके लिए प्रेयर करते होंगे ? रात को जग-जग कर किसके लिए भजन करते होंगे – हम सबके ही लिए भजन करते हैं न! और... आज इतने सालों के बाद, गुरुजी का इतना लाड़-प्यार मिलने के बाद भी, हमारे मन में यह बात दृढ़ता से क्यों नहीं बैठ पाई है कि वे जो भी करते हैं, हमारे लिए ही करते हैं, उन्हें कोई निजी स्वार्थ नहीं है। शायद कई बार हमारे मन-बुद्धि को न भी जंचे, लेकिन वे हमारा परम हित ही करेंगे–यह बात तो अब तक हमारे अंतर में बैठ जानी ही चाहिए थी।

मैं नहीं कहती कि **'अक्षरज्योति'** की हम बहनें पूर्णता को पा गई हैं। हम सब उस राह पर अग्रसर जरूर हैं, लेकिन स्वभाव से बिलकुल परे हो गए हैं, ऐसा भी नहीं कहती। फिर भी, गुरुजी ने हमारे अंदर ऐसे बीज डाल दिए हैं कि **हम आपके सुख से सुखी हैं और आपके दुःख से दुखी हैं...**

❋ गुरुजी, अभी - अभी एक दिन सारा हिसाब लगा रहे थे कि सांकरदा में प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का 80वां प्राकट्य पर्व मनाने वाले हैं। वहां पर संतों - मुक्तों ने ऐसा सोचा है कि **'प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की रजत तुला'** करेंगे। हमारे पास भी यह मॅसेज़ आया, तो गुरुजी ने सबसे कहा कि जिसके पास जैसी भी सुविधा हो, वैसे थोड़ी-थोड़ी चांदी - चाहे पचास ग्राम ही हो, उसमें देना। गुरुजी सहज ही बोले – अक्षरविहारीस्वामिजी के पर्व के लिए चांदी का इंतजाम करना है; नक्षु का बर्थडे, दीदी का बर्थडे, संक्रांति, मेरा मार्च का फंक्शन और फिर दिनकरभाई के यहां शिकागो फंक्शन में जाने का भी बड़ा प्रोजेक्ट है। दिनकरभाई काकाजी-पप्पाजी शताब्दी के निमित्त एक चरण शिकागो में मना रहे हैं, उसका भी बड़ा खर्चा है। यूँ सारा हिसाब लगाते हुए बोले –

सारा लोड तो अपनेपन से जुड़े हमारे इन हरिभक्तों पर ही पड़ेगा न। क्योंकि – हम बाहर रसीदें फाड़-फाड़ कर तो कभी उगाही करते नहीं।

यह बात सुनकर मेरे मन में विचार आया कि गुरुजी कितनी चिंता कर रहे हैं कि हरिभक्तों पर ज्यादा लोड न पड़े। तो, मार्च का कॉन्ट्रीब्यूशन जो मैं मांगती हूँ; उसके लिए इस बार कैसे कहूँगी कि गुरुजी के फंक्शन के लिए कॉन्ट्रीब्यूशन दो। और... गुरुजी भी तो कोई रीज़र्व फंड रखते नहीं हैं...

मैं छोटी थी तब काकाजी से सुना था कि सत्संग में ए टू ज़ेड क्लास होती है। एक बार सभा में यह भी बोले थे कि यह सत्संग 'जेमिनी सर्कस' जैसा है। **बंदर, बंदर की चाल से उछल-कूद ही करेगा। घोड़ा, घोड़े की रफ़्तार से दौड़ेगा। ऊंट, ऊंट के हिसाब से करवट बदलता ही रहेगा।** उनकी इस बात ने भी मेरे माइन्ड को बहुत रिलीफ़ दी कि इस रास्ते पर चलते हुए हम दूसरे किसी के कहने से गुरुजी से डिस्टन्स रखने के लिए क्यों तैयार हो जाते हैं? सब एक लेवल के तो हो नहीं सकते। हाँ, **सब प्रगति के पथ पर जरूर हैं, लेकिन सबसे एक जैसी अपेक्षा हम नहीं रख सकते।**

दूसरी बात – किसी के कहने से हमारे मन में ऐसा भाव पैदा हो जाए कि फलां ने मेरे बारे में गुरुजी से ऐसा कह दिया, जिसकी वज़ह से गुरुजी ने मुझसे ऐसा रियेक्ट किया –ऐसा कहा। आज फलां ने जरूर मेरे बारे में शिकायत की है, इसलिए गुरुजी का मूड आज मेरे प्रति ऐसा है। यह हम क्या कर रहे हैं? **किसी के कहने से गुरुजी यदि उसके बहकावे में आ जाते हैं और हमारे साथ वैसा बीहेव करते हैं, तो हमने गुरुजी को समझा - जाना ही नहीं।** इन सारी बातों से अब ऊपर उठने जैसा है।

शायद आप लोग भी जरूर जानते होंगे – हमारा आध्यात्मिक इतिहास बताता है कि द्रोणाचार्य ने अर्जुन को धनुर्विद्या सिखाई, लेकिन शुद्र होने के कारण **एकलव्य** को वह विद्या सिखाने से मना कर दिया; फिर भी उससे गुरु दक्षिणा में वही अंगूठा मांगा जो तीर चलाने में अत्यंत जरूरी है। **सत्यकाम जाबाली** जब गुरु के पास गए और कहा कि मुझे 'ब्रह्मविद्या' दो, तब गुरु ने कहा कि इस एक गाय को ले जाओ और जब इससे 400 गाय हो जाएँ, तब मेरे पास आना। गुरु यह बात शिष्य से उस समय कहते हैं, जब वह ब्रह्मज्ञान की शिक्षा लेने के लिए आता है! **आरुणी व उपमन्यु** नामक शिष्य थे। रात को गुरु ने आरुणी से कहा – *बरसात आ*

रही है, इससे खेतों में पानी भर जाएगा। आरूणी जब वहाँ गया, तो उसने देखा कि खेतों में वाकई पानी भर रहा था। मेंड़ बन कर वहाँ वह ख़ुद लेट गया, ताकि खेतों में पानी न जाए। पानी में लेटे रहने से उसका शरीर एकदम जड़वत् हो गया। सुबह गुरु उसे ढूंढते-ढूंढते वहाँ आए और शिष्य को उस हाल में देखा। हमारी ऐसी कसौटी तो कभी होती नहीं! **हमें तो गुरुजी ने मानो हाथों पर रखा है।**

मैं तो 33-34 साल से साक्षी हूँ। आज अगर शांति से बैठ कर हम सोचेंगे, तो पाएँगे कि **हरेक के जीवन में गुरुजी ने अथक परिश्रम किया है और वो भी प्यार से सींच कर; इस तरह की कोई कसौटी करके नहीं।** फिर भी छोटी-छोटी अपेक्षाओं, छोटी-छोटी बातों पर हम सत्पुरुष से दूरी रखने तक तैयार हो जाते हैं। दस में से मानो छः चीजें गुरुजी ने हमारी पूरी की हों और चार नहीं कीं, तब हम सोचने लगते हैं कि गुरुजी ने हमारे लिए क्या किया? लेकिन **बीते दिनों के पन्ने खोल करके देखेंगे, तो जरूर ख्याल आएगा कि गुरुजी ने हमारे जीवन में क्या नहीं किया? जितना उन्होंने किया है, उतना कोई कर नहीं सकता।** हमारी ओर से कमी रही होगी, लेकिन उनकी तरफ से कभी कोई कमी नहीं रही। मैं नहीं कहती कि ऐसे नकारात्मक विचार मन में न आएँ; लेकिन दिनों तक उन नेगेटिव विचारों में जो हम पड़े रहते हैं, वो सत्पुरुष को पसंद नहीं। इन स्वरूपों को विचार नहीं आएगा या जड़ वस्तु को नहीं आएगा। हमारे मन में तो विचार उठेंगे ही, लेकिन उनमें डूबे रह कर सत्पुरुष के साथ हम जो डिस्टन्स बढ़ाते जाते हैं, उससे संत को दुःख होता है कि अरे! मेरे प्यार का ऋण चुकाना तो दूर की बात, उल्टा तुम मुझसे ऐसे दूर हो गए!

❋ 1993 में जयपुर में मंदिर की मूर्तियाँ बनाई जा रही थीं। गुरुजी को मूर्तियाँ देखने के लिए बार-बार जयपुर जाना पड़ता था। उस समय मल्कानी अंकल की 'निसान' गाड़ी से गुरुजी जाते थे। वह उन्हें कम्फर्टेबल रहती थी-थकान नहीं होती थी। तब यहां से मेरे सिवा अन्य सभी बहनों एवं भाभियों-भाइयों को बारी-बारी से महाराज व काकाजी की मूर्तियाँ दिखाने के लिए वे ले गए। देखा जाए तो काकाजी को तो मैंने देखा है; भले शिल्प में ज्यादा पता नहीं चलता, लेकिन थोड़ा ख्याल आता कि मूर्ति यहां से ठीक नहीं है। चलो, वो बात भी नहीं, पर आनंद कराने या 'स्मृति' देने के हिसाब से भी नहीं ले गए। मेरे मन में भी विचार आ गया था कि सबके सब गए और मैं तो गई नहीं। पर, मैंने सोचा कि गुरुजी के ख्याल से बाहर तो हो नहीं सकता कि आनंदी ने तो काकाजी को देखा है, उनसे मिली हुई है। सो, मैंने सोचा कि मुझे यदि नहीं ले जा रहे हैं, तो उसमें भी जरूर कुछ मर्म होगा-मेरी टेस्टिंग कर रहे होंगे कि मेरे इस जॅस्चर से आनंदी किस विचार में जाती है। ऐसी कई छोटी-छोटी बातें–यहां ले गए, यहां नहीं ले गए; इसे ऊपर बिठाया, इसे नीचे बिठाया; इसके साथ गुरुजी ने इतनी देर बात की, मेरे साथ तो नहीं की–**ऐसी नापतोल हमें सत्संग का सुख नहीं लेने देती।**

दूसरी बात–हमें आज यहां अपना क्या स्टेन्डर्ड रखना है? मैं कई बार बातें सुनती हूँ कि अब तो अपने यहाँ स्टेटस के हिसाब से होने लगा है। अरे! 'शिक्षापत्री' में महाराज ने लिखा है कि जो व्यक्ति जिस सम्मान के लायक हो, उसे वैसा ही सम्मान देना चाहिए–इसे ध्यान में रखते हुए गुरुजी ने सारी सुविधा की है। पर,

क्या हम अपना स्टेटस बनाने के लिए यहाँ आते हैं ? उसने ऐसे कपड़े पहने होंगे, तो मुझे भी ऐसे ही पहन कर जाना चाहिए – इन चीजों में टाइम गंवाना है क्या ?... **हम भगवान के मंदिर में जा रहे हैं, गुरु के पास जा रहे हैं। उनसे अपनी वृत्तियां, अपने इंद्रियाँ - अंतःकरण के भाव टलवाने हैं। यहां पर किसी को क्या दिखाना है ? हमें तो गुरुजी को राज़ी करने के लिए यहां आना है। यहाँ स्टेन्डर्ड या स्टेटस की बात कहाँ रहती है ?** इन चीज़ों में हमें नहीं जाना है।

अमृतसर में हम गोल्डन टेम्पल का दर्शन करने गए थे। वहाँ कोई प्रगट गुरु नहीं हैं, लेकिन 'ग्रंथ साहब' को सब कुछ मान कर ग्रंथ की पूजा करते हैं। वहाँ शीशे का एक बॉक्स था, जिसमें सोने-चाँदी की चूड़ियां, अंगूठियां इत्यादि डली हुई थीं। देख कर आश्चर्य हुआ। किसी ने बताया कि यहाँ सिक्ख दर्शन करने आते हैं, तो इसमें अपना गुप्तदान छोड़ जाते हैं। 'शीशगंज गुरुद्वारा' के बारे में भी सुना है कि बड़ी-बड़ी मर्सिडीज़ में आने वाले सिख भक्त सुबह चार - पाँच बजे आकर गुरुद्वारे को पानी से धोते हैं। उन्हें प्रगट गुरु नहीं मिले, उसके बावजूद ! और... हम प्रगट गुरु मिलने के बाद भी स्टेन्डर्ड और स्टेटस सिम्बॉल की बात करते हैं ! हम किस दिशा में जा रहे हैं... गुरुजी तो हमें कुछ और देने के लिए बैठे हैं। गुरुजी अकसर बात करते हैं कि हम त्रिभुवन भीमजी की दुकान पर जाकर कहें कि भइया, ज़रा दो किलो आलू देना, तो वो हम पर हंसेगा। पर, हम यहां ऐसा ही कर रहे हैं। इसलिए ऐसी बातों में अपना टाइम वेस्ट न करें।

अबकी बार गुरुजी ने 2016 का जो कॅलन्डर निकलवाया है, उसे आप सबने देखा भी होगा। उस पर लिखा है – **''भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि वो ही 'सत्संग' है।''** एक ही सेन्टेन्स लिखा है। हमें ऐसे सत्संग की तरफ प्रोग्रेस करनी है। ख्याल रखें, गुरुजी हमसे ऐसा ही कराना चाहते हैं। एक प्रसंग मुझे याद आता है –

❋ 4 जनवरी 2006 की बात है, छपैया - महाराज के जन्मस्थान से कुछ गेस्ट आने वाले थे। तो, वी.के. अग्रवालजी से उनकी नई गाड़ी मंगाई थी। गेस्ट को छोड़ने-करने के बाद गार्गी ड्राइव करके वो गाड़ी वी.के. अग्रवालजी को लौटाने के लिए जा रही थी... कमला नगर का एरिया थोड़ा रश वाला होने के कारण, बॅक करते हुए गार्गी से गाड़ी थोड़ा लग गई। गार्गी एकदम घबरा गई। मंदिर फोन करके उसने गुरुजी को कहलवाया कि ऐसे गाड़ी लग गई है। तो, गुरुजी ने कहलवाया कि इस बारे चिंता ही न करो। वी.के. को चाबी दे दो और कह दीजिए कि गाड़ी ऐसे लग गई है। गुरुजी का मॅसेज सुनने के बाद भी गार्गी को यह सोच कर रोना आता रहा कि अरे, मेरे से यह क्या हुआ ? वी.के. अग्रवालजी को चाबी देने के लिए गई, पर गार्गी की आंखों में तो आंसू थे ही। दूसरी ओर, इतनी देर में तो गुरुजी का फोन वी.के. अग्रवालजी के पास पहुंच ही चुका था। वी.के. अग्रवालजी ने बहनों को देखते ही कहा– *आप लोग अजीब हो ! क्या हो गया अगर गाड़ी लग गई तो ? यदि दिव्या (उनकी लड़की) से लग जाती, तो मैं क्या करता ? इतनी छोटी- सी चीज़ के लिए आपने गुरुजी को फोन किया ! और इस बात पर क्या रोना होता है ? यह तो ठीक हो जाएगी।*

जितना मैं समझी हूँ, गुरुजी को यही कराना है। यह आत्मबुद्धि-प्रीति ! वी.के. अग्रवालजी की यह बात सुन कर गुरुजी बहुत राज़ी हो गए थे कि इसे **'सत्संग किया'** बोला जाता है। **गुरुजी ने कुटुंबभावना की यहां पर जो जोत जलाई है - अलख जगा कर बैठे हैं , हमें बस उसी को डॅवलप करना है।** 2016 शुरू हो गया। काकाजी-पप्पाजी की शताब्दी भी आएगी, तो आओ हम सब अब इस राह पर चलें और गुरुजी को हाश करें।

- गुरुजी का एक जॅस्चर याद आया। मेरे ख्याल से 3-4 साल पहले की बात है। गुरुजी ने हाथ में पहनने वाली छोटी माला 6-7 बार से ज्यादा बंसरी के पास भिजवाई और कहलवाया–

  मार्कर पेन से इसके एक-एक मनके पर 'महिमा-महिमा' लिख कर मुझे भिजवाओ...

  मैंने और बंसरी ने तब आपस में बात की कि उनका यह जॅस्चर हमारे लिए है कि अब हम महिमा में रहने लगें। गुरुजी के जीवन में सबकी–छोटे से छोटे मुक्त की खूब महिमा है ; स्वरूपों की तो बात ही अलग है। उन्हें छोटे से बच्चे की किसी पसंद का पता चलेगा, तो वो पीछे लग जाते हैं कि पहले इसे यह लाकर दो।

- हाल ही की बात है ! विजयपालजी के बड़े भाई महेन्द्रसिंहजी के घर पधरामनी के लिए गुरुजी गए। वहाँ कई हरिभक्त मौजूद थे। बातों-बातों में विजयपालजी से पता चला कि उनके ढाई साल के पोते निदांश को अच्छी गाड़ियों का खूब शौक़ है, वह उनके नाम तक से उन्हें पहचानता है। गुरुजी की मर्सिडीज़ देख कर उसने कहा होगा कि मुझे इसमें बैठना है। यह बात सुन कर तुरंत ही गुरुजी ने निदांश के पापा नितिन से कहा–

  मैं अपनी गाड़ी छोड़ जाता हूँ। तुम निदांश को बिठा कर आज लाँग ड्राईव पर ले जाना।

  ऐसा कहते हुए सहजता से गुरुजी बोले– *वह कितना खुश हो जाएगा ! उसे ज़िदगीभर याद रहेगा।*

  यूँ, छोटे से बच्चे के प्रति भी भक्ति अदा करना वे चूकते नहीं। मैंने पढ़ा हैं–श्रीजी महाराज द्वारा दो पाँव पर घुमाई घोड़ी की स्मृति करते हुए **कवि दलपतराम** अपनी 60 वर्ष की आयु में बोले थे –

  सात वर्ष की आयु में मैंने सहजानंदस्वामी का ऐसा जो दर्शन किया था, वह आज भी मुझे तरोताज़ा है।

  इसी प्रकार गुरुजी का यह जॅस्चर केवल निदांश के लिए ही नहीं, बल्कि वहाँ उपस्थित सभी मुक्तों के लिए एक चिरंजीव स्मृति बन गया !

अंत में, **हमारा वर्तन** उनका ऐसा ही **परिचय बन जाए** –

'अरे ! दिल्ली का समाज - वो तो अलग ही है; गुरुजी की ट्रेनिंग है न ?' – ऐसा एहसास हो जाए।

कल संक्रांति है ; तो, हम **अपने जीवन की दिशा** सचमुच ऐसे **बदलें**

और

हमारा वर्तन देख कर गुरुजी का अंतर प्रसन्न रहे – ऐसी सब गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

✡✡✡

सर्वोपरि प्रभु का अवतरणदिन
एवं
उनके अखंड धारक संतों का प्राकट्य पर्व...

❖ 15 **अप्रैल, रामनौमी – पूर्ण पुरुषोत्तम श्री सहजानंदजी महाराज का प्राकट्य दिन –** पृथ्वी पर मंगलप्रभात का सूर्योदय ! सदैव सनाथ होने का दिन ! इस धरती पर अनेक अवतार पुरुषों और औलिया संतों ने प्रगट होकर कई वरदानों की वर्षा की, लेकिन **मानवस्वरूप में पृथ्वी पर अखंड रहने का सर्वश्रेष्ठ व बेमिसाल वरदान तो** अवतारों के अवतारी **भगवान स्वामिनारायण ने ही दिया !** सो, महाराज की वह मंगलमयी मूर्ति आज भी पृथ्वी से गई नहीं, न ही कभी जाएगी। ब्रह्मस्वरूप संत द्वारा अखंड जीवंत यह ज्योति प्रज्जवलित रहेगी। **ओरिजिनल स्पिरिच्युअल डीसीप्लीक सक्सेशन की कोन्स्टन्ट एन्ड कन्टीन्युअस हाईरार्कि अन्यत्र कहीं भी - अन्य किसी धर्म, संप्रदाय या पंथ में नहीं मिलेगी !** दरअसल, **यही भगवान स्वामिनारायण की 'सर्वोपरिता' है।** यूं, समग्र मानवजाति को, अपने सच्चे संत के रूप में मोक्ष की चाबी उन्होंने बख़्शिश में दे दी। परंतु, अर्जुन व हनुमानजी की भाँति, उन्हें पहचानना पड़ता है। हम अपने आप में मान बैठते हैं कि हमने तो पहचान लिया है। इसीलिए तो **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** ने प्रकरण – **8** की **17**वीं बात में कहा है –

...जैसे (यह) भगवान हैं, वैसे यदि यथार्थ में पहचाने जाएँ, तो और भगवान ढूंढने न पड़ें तथा ये साधु जैसे हैं, वैसे यदि पहचाने जाएँ, तो अन्य कोई साधु पहचानने की ज़रूरत नहीं और यह जो प्राप्ति हुई है, वह यथार्थरूप से समझ आ जाए, तो अन्य कोई प्राप्ति करनी शेष नहीं रहती...

इससे भी अधिक, प्रकरण – **8** की **11**वीं बात में यहाँ तक कहा है –

महाराज ने आठ महीने तक साधुओं को अपने साथ रख कर अपने पुरुषोत्तमभाव (सर्वोपरिभाव) की बातें कीं।
पर, जब सभी साधुओं से पूछा – आप हमें कैसा समझते हो ?
तब किसी ने कहा – आप नरनारायण हैं।
किसी ने कहा – आप तो श्वेतद्वीप के पति वासुदेव ही हैं।
किसी ने कहा – आप तो वैकुंठनाथ लक्ष्मीनारायण हैं।
किसी ने कहा – आप तो गोलोकाधिपति स्वयं श्रीकृष्ण ही हैं।
यूँ सभी ने अलग-अलग प्रकार से बताया। यह सुन कर महाराज उदास हो गए !
और फिर... महाराज ने कहा – 'कबूतर के कबूतर रहे !'

ऐसे सर्वोपरि प्रभु के अवतरणदिन निमित्त - उनके नाम **'सहजानंद'** के हर एक अक्षर की महिमा, उन्हें सांगोपांग अखंड धारे हुए, **गुरुहरि योगीजी महाराज** की आशीर्वाणी से ही जानें –

*'स' उचारते ही '**स**भी दुःख' टलें,*
*'ह' उचारते ही 'श्री **ह**रि के धाम' को पाएँ,*

*'ज' उचारते ही '**ज**य - जयकार' हो जाए,*

*'न' उचारते ही **नि**र्भय हो जाएं,*

*'द' के उच्चारण समेत 'सहजानं**द**' बोलते हुए – डंके की चोट पर 'अक्षरधाम' को पाएँ।*

***'स्वामिनारायण'** नाम सार है, जिससे कई जीव भवसागर तर गए हैं।*

भगवान के नाम के प्रत्येक अक्षर की विशेष महिमा है ! सद्गुरु निष्कुलानंदस्वामी ने तो लिखा है –

***'स्वामिनारायण'** नाम यदि कोई जपे, तो वह अवश्य 'अक्षरधाम' में जाए।*

सो, अखंड भजन किया करने की हम आदत ड़ालें।

अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का कंठ 'मोर की भांति' हिलता रहता था; वे निरंतर कंठ में भजन करते रहते थे ! सभी ने देखा था कि **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज,** देह की बीमारी में भी लेटे हुए, अखंड माला फेरते रहते थे। **गुरुहरि काकाजी महाराज** को तो हम कइयों ने देखा है–वे तो मानो 'धुन' का मूर्तिमान स्वरूप ही थे। *'चलो, दो मिनिट धुन कर लें'*–यूं कह कर कई घंटों तक वे धुन करते-करवाते। इससे आगे, 'सीता' शब्द की महिमा कहते हुए गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है–

'सी' कहते ही सुख उपजे; 'ता' कहते ही तमस् जाए...

अर्थात् – 'सी' बोलने से सुख का ढेर हो और 'ता' कहते ही अंधकार टल जाए।

तुलसीदासजी ने तो कहा है कि यदि 'सीता' शब्द पूरा बोलो - 'भक्त' का नाम लो, तो भगवान राम हमसे दूर न रहें। इसी प्रकार **'गुणातीत'** शब्द बोलो तो महाराज दूर न रहें... **'भक्त' का ऐसा माहात्म्य है।**

'स्वामिनारायण' नाम में **भक्त** (स्वामी) **और भगवान** (नारायण)–दोनों का समावेश है।

हमें यदि यह माहात्म्य समझ में आ जाए, तो **'स्वामिनारायण'** नाम का भजन किए बिना रहा ही न जाए। यूँ अखंड भजन के व्यसनी बन कर - आदत डाल कर - अपना समग्र तंत्र 'प्रगट प्रभु' की मूर्ति में लयलीन करते हुए हम परम सुख के भोक्ता बनें–यही रामनवमी के महामंगलकारी अवसर निमित्त भगवान स्वामिनारायण व प्रगट स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना...

❖ **22 मार्च, होली–** नारायण प्रभु के प्रति अडिग निष्ठा के मूर्तस्वरूप **भक्त प्रहलादजी** के **विजय पर्व** के साथ **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** का **प्राकट्य दिन !** ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज ने प्रत्यक्ष प्रभु को तनिक भी मोहताज़ किए बिना, उन्हें ही कर्ता-हर्ता मान कर, हर एक में केवल प्रभु का संबंध ही देखा। यही कारण था कि भले ही कितने भी विरोधों, अपमान, उपेक्षाओं, उलाहनों, कष्टों से गुज़रना पड़ा हो, लेकिन गुरु गुणातीत के प्रति अप्रतिम प्रीति के वश उन्हें कुछ भी परेशानी नहीं लगी। प्रभु के संबंध की महिमा और ब्रह्मानंद उनके जीवन में से कभी नहीं गया। भगतजी महाराज यदि प्रगटे न होते, तो बड़े पुरुष के सतत सान्निध्य में रहते हुए भी, 'जीव' में से 'शिव' बनने का राजमार्ग जनसामान्य के लिए सुलभ न होता। दरअसल, **गुरु गुणातीत ने धरातल पर आकर साधन मात्र पर सेरे लगा दिए।** केवल अपने संबंध से ही जीवों को ब्रह्मरूप किया ! **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** ने अपनी बातों में कहा है–

नदी तैर सकते हैं, तालाब तैर सकते हैं, खाड़ी लाँघ सकते हैं, लेकिन समुद्र तैरने के लिए स्टीमर चाहिए। हम अपने बल से स्वयं समुद्र को तैर कर पार नहीं कर सकते। इसी प्रकार जीतेजी कल्याण और आख़िरी जन्म हेतु गुणातीतभाव को पाए समर्थ संतरूपी ज़हाज़ चाहिएं ही। और... जैसे ज़हाज़ में तो कोई भी – बलशाली हो या कमज़ोर, अकेला हो या सपरिवार – अरे! अपने माल - सामान के साथ पार उतर जाए; ऐसे ही साधुरूपी स्टीमर की गोद में बैठ कर कैसा भी जीव हो, वह आसानी से भवसागर तर जाए...

प्रगट प्रभु की विशेषता बताते हुए उन्होंने प्रकरण एक की पाँचवी बात में यह भी कहा है–

यह जीव साधन तो क्या करेगा? यह तो रेंट जोड़ कर फसल करने जैसा कठिन काम है, क्योंकि उस फसल को तो पशु खा जाएँ, पक्षी खा जाएँ। यूं, साधन कर - करके कल्याण पाना – ऐसी ही बात है; जबकि, भगवान का स्वरूप ही धरती पर आए, तो जैसे सारी पृथ्वी पर जब बारिश गिरे व भरपूर फसल पकती है – फिर उसे चाहे पशु खाएँ, पक्षी खाएँ, चोर चुरा कर ले जाएँ – वह खूटेगी नहीं। कुएँ व तालाब तथा नदियों का पानी खूट सकता है, पर समुद्र में पानी कभी नहीं खूटता; भगवान द्वारा कल्याण होना भी ऐसी ही बात है। यह तो बहुत दुर्लभ है, पर हमारी समझ में नहीं आती।

वाकई, यह बात दिमाग़ में उतरनी खूब यानि खूब ही कठिन है, क्योंकि बुद्धि से परे की यह बात है। भीतर में ऐसा रहता ही है कि इतना तो करना ही पड़ता है, ऐसा तो वर्तना ही पड़ता है। पर, **गुरुहरि योगीजी महाराज** लोहे और लोहचुंबक का जो दृष्टांत देते –

लोहा लोहचुंबक के संबंध में आने मात्र से ही लोहचुंबक बन जाता है; इसी प्रकार हमारा ऐसे संत के साथ 'संबंध' होना चाहिए।

हमें यह क्या प्राप्ति हुई, उसकी महिमा बयां करते हुए, **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** समय-समय पर कहते – *महाराज ने अक्षरधाम* ***'मौज'*** *में दिया है*

और फिर... पूछते : *मौज का मूल्य होता है क्या?*

सच, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की चिरंजीव जीवनभावना – ***'यह देह गुणातीत का है, गुणातीत के लिए मेरा सब कुछ कुर्बान है...'*** – साधकों के लिए 'प्रगट प्रभु' की प्रसन्नता हेतु बलवर्धक औषधि (टॉनिक) के समान है। ऐसी दिव्य औषधि के बल से प्रगट गुणातीत संत की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए हम तत्पर हों – यही मंगलकारी दिन की प्रार्थना...

❖ **23 मार्च, धुलेन्डी – प.पू. अश्विनभाई** के शब्दों में –

'गुणगान करना और महिमा गाना, जिनका सहज स्वभाव है' –

ऐसे **संतभगवंत प.पू. साहेबजी का अमृतपर्व!**

जिसके हृदय में प्रभु का अखंड निवास हुआ हो, ऐसा वही सहजभाव से कर सकता है और... अपने संबंध वाले मुक्तों को प्रभु के रंग से रंग कर, 'गुणातीतभाव' प्रगटा सकता है। यही कारण है कि नीर के समान प.पू. साहेबजी का पारदर्शी जीवन हर एक को छू जाता है।

जैसे कि अबकी बार **'शिक्षापत्री' जयंती** की **तिथि** एवं **दिनाँक** दोनों एक ही दिन आए, इसी प्रकार संत भगवंत **प.पू. साहेबजी** की **प्राकट्य तिथि** एवं **दिनाँक** भी इस बार एक ही दिन आ रहे हैं।

वडोदरा जिले के सोखड़ा गाँव में, भगवान स्वामिनारायण के आश्रित कुल में **23 मार्च 1940 – धुलेन्डी** के दिन, पू. शंकरभाई एवं पू. कमलाबा के यहां द्वितीय संतान के रूप में संतभगवंत प.पू. साहेबजी (जसभाई) का प्राकट्य हुआ। प.पू. साहेबजी का तो जन्म ही **'आशीर्वाद'** कहा जाए। उनके पूर्वज पू. काशीदास पटेलजी ने भगवान स्वामिनारायण के अनुयायी सद्. गोपाळानंदस्वामिजी का संसर्ग करके, तत्कालीन समय में निडरता से स्वामिनारायण संप्रदाय अपनाया था। फलस्वरूप अनादि महामुक्त **सद्. गोपालानंदस्वामिजी** ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा–

'इस गाँव और समग्र समाज का नेतृत्व करने वाले प्रतापी पुत्र का जन्म तुम्हारे वंश में होगा।'

पू. काशीदास पटेलजी के पौत्र पू. त्रिभुवनदासजी का गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के साथ संबंध हुआ। उन्होंने सोखड़ा में नया मंदिर बनवाने के लिए ज़मीन दान में दी। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने गुरुहरि योगीजी महाराज को नया मंदिर बनाने की जिम्मेदारी सौंपी। सो, गुरुहरि योगीजी महाराज सोखड़ा में आकर छः-छः महीने रहते व बाकी समय वे विचरण करते। इस दौरान संतभगवंत साहेबजी का गुरुहरि योगीजी महाराज से मिलाप हुआ। उनसे वे बहुत प्रभावित हुए। 2010 – 'मैत्री मिलन महोत्सव' में **संतभगवंत साहेबजी** ने अपनी हृदयभावना व्यक्त करते हुए बताया था –

...1964 में योगीजी महाराज ने आणंद के मंदिर में दादुकाका से मेरा मिलाप करवाया और हम सब युवकों को आज्ञा दी कि दादुभाई की आज्ञा में रहना। तब से हम दादुकाकाजी को 'योगी' के रूप में मानकर उनकी आज्ञा में रहे थे।

ऐसे तो हम योगीजी महाराज की आज्ञा में रहकर भक्ति कर रहे थे; युवक मंडल की सभा और सेवा-भक्ति करते थे; बापा के आस-पास घूमते रहते थे पर –

योगीजी महाराज कौन हैं, उन्हें राज़ी करने का तरीका क्या है, सही जीवन कैसे जी सकते हैं – ये सभी बातें काकाजी के सान्निध्य में रहकर हमारे जीवन में दृढ़ हुईं।

हम जब अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय बनवा रहे थे, तब काकाजी उसके लिए आते रहते थे। छात्रालय के निमित्त काकाजी हमारे साथ रहते थे। हमारे साथ स्टूडन्ट्स हॉस्टल में वे रहे! गाँव – गाँव घूमते थे। काकाजी मतलब – 'अखंड माहात्म्य!' कॉन्सटन्ट ॲन्ड कन्टीन्युअस कथावार्ता! काम भी चलता रहता, कथावार्ता भी खूब करते। योगीबापा के माहात्म्य की बातें करते तो वे थकते ही नहीं थे, सुनने वाले को भी इतना आनंद मिलता कि उसे भी थकावट नहीं लगती। ***उनकी बातों से, उनके प्रेम से, उनकी हूँफ से, उनके मार्गदर्शन से हम सब युवकों – अश्विनभाई, शान्तिभाई, रतिभाई, सनदभाई – ने तै किया कि जीवन में योगीजी महाराज को राज़ी करना है,*** *योगीजी महाराज जो कहें वही करना है; योगीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही जीना है। जीवन का ऐसा गोल - ध्येय निश्चित हो गया - पक्का हो गया।*

छात्रालय तो निमित्त था, लेकिन योगीजी महाराज ने प्रसन्न होकर हमें काकाजी के योग में रख दिया, यह हम पर बहुत बड़ी कृपा हुई।

आज प्रतीत होता है कि **गुरुहरि योगीजी महाराज** से दृढ़ संबंध करके, उनसे निम्न आशिष पाए व अस्सी ब्रह्मविद्या पढ़े हुए राहबर के महारथी एवं असंख्य युवाओं के –मुमुक्षओं के दिल की धड़कन बने **संतभगवंत प.पू. साहेबजी**, अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना का ध्वज दिगंत में फहरा रहे हैं...

- *हे जशुभाई... आप में स्वामी साक्षात् विराजमान हैं। आपके वर्तन से ब्रह्मांड डोल गया है...*
- *जशुभाई आपका प्राकट्य हुआ, तो स्वामी के प्रताप से 200 युवक ब्रह्मविद्या की कॉलेज के भागीदार बन गए... इसकी ध्वजा अक्षरधाम में फहरेगी और समग्र देश डोलेगा, ऐसा विश्वास है...*
- *जशुभाई साहेब... गढडा प्रथम 37 के मुताबिक आपके दर्शन की तान है... हे जशुभाई आप... मेरे जीवन प्राण हो... आप अखंड याद आते हो...*
- *जशुभाई, आप स्वामी के लाड़ले हो, जो तै करोगे वह हो जाएगा...*
- *जशुभाई की स्थिति अलौकिक है... जशुभाई महाप्रसादी की दिव्य मूर्ति... स्वामिश्रीजी के लाड़ले जशुभाई साहेब हमें मिले हैं...*

सो, **भगवान स्वामिनारायण** का **प्रादुर्भाव**, **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** का **प्राकट्य** एवं **संतभगवंत प.पू. साहेबजी** का **अमृत महोत्सव** जैसे मंगलकारी पर्वों पर, वर्षो पहले ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के जीवन से निर्दिष्ट 'कल्याण रीति' का एक-एक शब्द समझ कर, हमें हुई अमूल्य प्राप्ति का मोल समझें...

ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज एवं असंख्य मुमुक्षुओं के लिए कल्याण रीति

गीता, भागवत, उपनिषदों एवं अन्य शास्त्रों में
परम भागवत एकांतिक संत के लक्षण और उनके द्वारा सनातन कल्याण का सरल मार्ग बताया है।
उसी प्रकार श्रीजी महाराज ने मोक्ष का अंतिम द्वार के खुलने का रहस्य
वचनामृत प्रथम 54, मध्य 7-28-54, अत्यं 2, वड़ताल 5-11-53 इत्यादि में स्पष्ट रूप से बताया है।
इस संदर्भ में भागवत के ग्यारहवें स्कंध के निम्न दो श्लोक मुख्य हैं:

1. **प्रसंगमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः।**
   स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम्।।

(जीव को अपनी देह के संबंधी से जैसा दृढ़ लगाव है, ठीक वैसा ही संबंध यदि भगवान के एकांतिक साधु से हो, तो उस जीव के मोक्ष का द्वार खुल जाता है।)

2. **यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।**
   यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।।

(जिसे वायु (वात), पित्त और कफ़युक्त तीन धातुमय शरीर व स्त्रीपुत्रादिक में आत्मबुद्धि है, पत्थर की प्रतिमा के प्रति देवबुद्धि है तथा जल के प्रति तीर्थबुद्धि है; परंतु यदि उसे भगवान के एकांतिक ज्ञानीभक्त के प्रति वैसी ही आत्मबुद्धि नहीं है, तो उसे पशुओं में गधा जानना।)

इसी बात पर ज़ोर देते हुए–
श्री कृष्ण भगवान ने उद्धव को, कपिलदेव भगवान ने माता देवहुति को

एवं

श्रीजी महाराज ने भक्तिमाता को बताया –

'प्रत्यक्ष भगवान या उनके अवतार या एकांतिक साधु-परम भागवत संत की संगत से ही भागवत धर्म-एकांतिक धर्म का पोषण होता है व जीव के मोक्ष का द्वार खुलता है।'

श्रीकृष्ण भगवान ने भागवत में

तप, त्याग, वैराग्य अष्टांगयोग, आत्मनिष्ठा, स्वधर्म, ब्रह्मचर्य

एवं

अन्य करोड़ों साधनों से भी अधिक 'सत्पुरुष के समागम' को ही

ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करने का प्रमुख स्रोत बताते हुए, इसे महत्त्वपूर्ण गिनवाया है।

सच्चे संत के प्रसंग को ही **'सत्संग'** कहा है, **'एकांतिकी भक्ति'** माना है।

वचनामृत मध्य 59 में ऐसे संत की प्राप्ति को ही **'परमपद'** या **'परम कल्याण'** कहा है।

प्रगट संत के संबंध के बिना इस अंतिम रहस्य को समझा ही नहीं जा सकता

और

जीतेजी ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म पुरुषोत्तमनारायण श्री सहजानंदस्वामी के दिव्य स्वरूप में जुड़ा ही नहीं जा सकता

एवं

अंतिम मुक्ति या परमकल्याण अर्थात् 'आत्यंतिक मोक्ष' सिद्ध नहीं होता।

शास्त्रों में अनंत प्रकार के कल्याण, आध्यात्मिक स्थितियाँ और उनके सुखों का वर्णन है।

लेकिन आख़िरी जन्म, कि जब –

प्रकृति-पुरुष का कार्य व्यर्थ-मिथ्या ही है, यह जान कर उसमें कोई दिलचस्पी न रहे

या

जीतेजी सभी वासनाओं का संपूर्ण क्षय होकर, प्रकृति या स्वभाव का परिवर्तन होकर,

ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ जाएं –**ऐसा मोक्ष** प्राप्त नहीं हो सकता।

सो, भगवान अथवा प्रत्यक्ष सच्चे संत द्वारा ही

कारण व महाकारण के भाव पूर्णतः टाल दिए जाने पर, जो मोक्ष होता है,

वह **'संतमार्ग'** सरलता-सुगमता से

बिलकुल अनपढ़ व तुच्छ लगते जीव के लिए भी कैसे अत्यंत आसान बना

और

अनादि महामुक्तराज प्रागजी भक्त ने वह कैसे सिद्ध किया, उसे समझें।

परम भागवत एकांतिक संत की कल्याण रीति अपूर्व और अलग ही पड़ जाती है।

युग धर्म को साथ में रख कर,

असंख्य मुमुक्षुओं को केवल अपने 'प्रगट' संबंध से ही सेवा, समागम और प्रसंग द्वारा,

एकांतिक धर्म किस प्रकार हमेशा के लिए खुला रखा गया है,

भगतजी महाराज के जीवन से ही हमें इसका ख्याल पड़ जाता है।

गीता, भागवत और वेदांत के महावाक्यों के जो रहस्य गहन ही बने रहते थे
और जिन्हें
विद्वान ब्राह्मणों या आचार्यों के सिवा अन्य कोई समझ नहीं सकता था, उन्हें
गुजरात और काठियावाड़ के अनपढ़ गिने जाने वाले, सीधे-सादे व भले देहाती भी
भगतजी महाराज के संपर्क में आते ही,
अपने जीवन में बिलकुल सरलता और सुगमता से उतार लेते थे।
आत्मा-परमात्मा के स्वरूप का ऊँचे से ऊँचा साक्षात् ज्ञान व अनुभव
और
उन्हें राज़ी करने की रीति मूर्तिमान करके, तत्त्वज्ञान को जीवंत बना कर,
समता, सुहृद्भाव और निर्मानीभाव जैसे मंगलकारी भाव प्रकटा कर
जीतेजी ही उन्हें सिद्ध करके, दूसरों के लिए वे सबूत रूप उदाहरण बनते थे।
सर्वोपरि संत की अनोखी कल्याण रीति की वजह से वह संभव हुआ है।
अन्य संतों की रीति, जो कि और साधनों पर आधारित है
या
श्रद्धा, तप, योग, इत्यादि करा-करा कर मोक्षप्राप्ति के मार्ग को गहन (जटिल-कठिन-पेचीदा) बनाती है
और
जीतेजी ही मोक्ष हो जाने की प्रतीति भी कराती नहीं।
ऐसी **'क्रियासाध्य'** रीति की अपेक्षा, यह **'कृपासाध्य'** रीति लाखों मनुष्यों के लिए सरल रहती है।
भगतजी महाराज के प्रसंगों से - उनके निजी जीवन से – वह सभी के लिए दृष्टांत रूप है।
वाकई ऐसी काबिले-तारीफ़ और अद्वितीय यही रीति, परंपरागत प्रगट स्वरूपों द्वारा
अब भी मौजूद और संभव है।
पू. शास्त्रीजी महाराज द्वारा वह रीति प्रचलित हुई
और
प.पू. ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज भी उसी भाँति अब भी असंख्य मुमुक्षुओं के लिए
आत्यंतिक मुक्ति का-सभी को ब्रह्मरूप करके भगवान में जोड़ने का – वैसा ही कार्य कर रहे हैं।
यह हम सभी के लिए अहोभाग्य की बात है।
यह पल, यह योग और प्रगट का प्रसंग यदि समझ में आ जाए तो
अनंत जन्म के पाप उड़ जाएँ और जीव जीतेजी ही ब्रह्मरूप हो सकता है।
महाविष्णुरूप ऐसा अलौकिक सत्संग
सच्चे संत की कृपा और अंतर की अत्यंत तीव्र अभीप्सा के बिना समझ में ही नहीं आता।
परोक्ष देवों, प्रतिमाओं और मुक्तों में सभी की आस्था है,
लेकिन प्रगट के प्रति होना या टिकना अत्यंत मुश्किल है।

लेकिन, यदि – प्रत्यक्ष भगवान या प्रत्यक्ष सच्चे संत में अनन्यनिष्ठा हो जाए तो,
केवल संबंध से ही जेतलपुर की वेश्या का जैसे सद्‌गुरु मुक्तानंदस्वामिजी जैसा **'कल्याण'** हुआ
या
शुकदेवजी द्वारा जैसे परीक्षित का सात ही दिन में **'मोक्ष'** हुआ,
उसी प्रकार भगतजी महाराज द्वारा अनुभूत व सिद्ध किया गया **'गुणातीत एकांतिक धर्म'**
सभी के लिए सरल बना है;
हर किसी के लिए जीतेजी ही सुलभ रहा है
और
धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति एवं महिमारूपी कल्याणकारी गुण जीवन में प्रगट होकर,
अन्यों को भी प्रतीतिरूप बनता है और धाम का निर्गुण सुख प्राप्त करवाता है।
दरजी की देह में रहते हुए, बिलकुल निर्मानीभाव से वर्त कर,
अनादि महामुनिराज गोपाळानंदस्वामी का तेरह वर्ष समागम करके,
उनके वचन से जूनागढ़ में अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की संगत से,
आत्मा और परमात्मा का, ब्रह्म और परब्रह्म का, अक्षर और पुरुषोत्तम के स्वरूपों का साक्षात्कार
भगतजी महाराज ने किया
और
संतवर्य शास्त्रीजी महाराज जैसे को, अपने दाहिने हाथ के समान उत्तम सेवक मान कर, ज्ञानपूँजी सौंप दी
एवं
स्वामिश्रीजी के साक्षात् स्वरूप में जोड़ दिया।
वह विरासत आज असंख्य मनुष्यों के लिए सरल व सुगम है – यही इस संतमार्ग की विशिष्टता है।
'आसरे से कल्याण' मनवा कर, उन्होंने –
'जीवनमुक्त दशा' प्राप्त करने के लिए **गुणातीत ज्ञान** सभी के लिए सुगम बना दिया है।
उसी दौरान सौराष्ट्र में हमारे अनादि मुक्तराज जागास्वामी भी 'गुणातीत ज्ञान' फैला रहे थे।
उनके द्वारा भी अनेक मुक्तों ने ब्राह्मीस्थिति प्राप्त की है।
यूँ, श्रीजी महाराज के ही दो नेत्रों – प्रागजी भक्त और जागास्वामी ने
असंख्य मनुष्यों के कल्याण के लिए सरल से सरल मार्ग दिखाया है।
आज उसकी पुष्टि संतवर्य योगीजी महाराज अफ्रीका, विलायत एवं अपने देश में गाँव-गाँव घूम कर,
कर रहे हैं और अखंडित रखी है।
इस प्रकार शिक्षापत्री के श्लोकों 116, 121 * के मुताबिक

---

* *अपनी जीवात्मा को स्थूल, सूक्ष्म और कारण देह से पृथक मान कर, श्री कृष्ण भगवान की **'ब्रह्मभाव'** से ('ब्रह्मरूप' होकर) हमेशा भक्ति करना – 116*

*हमारा **'मत'** विशिष्टाद्वैत है, हमारा प्रिय **'धाम'** गोलोक है और उस धाम में श्रीकृष्ण भगवान की **'ब्रह्मभाव'** से ('ब्रह्मरूप' होकर) सेवा करने को ही हम **'मुक्ति'** मानते हैं – 121*

(ब्रह्मरूप वर्तते हुए साध्य ऐसी) सच्ची मुक्ति का मार्ग

हमें बिना प्रयत्न, बिना परिश्रम या कोई साधन किए - केवल करुणा से ही, संत की कृपा से मिला है।

तो, सभी उसकी पुष्टि करें और ऊँचे से ऊँचे इस तत्त्वज्ञान को सरल बना कर

उन्होंने बताई कल्याण की निम्न रीति, सभी स्थल पर प्रगटाएँ;

जिससे सभी जीतेजी ही निर्गुण सुख प्राप्त कर सकें।

ब्राह्मीस्थिति वाले ऐसे संत में स्वामिश्रीजी समग्ररूप से प्रगट रहते हैं।

श्रीजी महाराज उनसे सभी क्रियाएँ करवाते हैं;

सो ही – वे सब क्रियाएँ मंगलकारी और कल्याणकारी ही लगती हैं।

अंतर में शांति, सुख और आनंद का अनुभव होता है

और

अपने दोष का दर्शन होकर, उसे टालने का बल मिलता है।

संत से असाधारण प्रीति द्वारा ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करने की यह रीति सभी को प्राप्त हो, यही अभ्यर्थना है।

1. महाराज और स्वामी को अखंड रखे हुए सच्चे संत को **'मोक्ष का द्वार'** दृढ़ता से मान कर,
   उनमें 'सर्वोपरिभाव' लाकर, अनन्यभाव से जुड़ जाना।
   'मैं संत का और ये संत ही मेरे जीवनप्राण' –यूँ मान कर
   श्रीजी महाराज का स्वधर्म युक्त भजन करना।
   ऐसे संत से असाधारण प्रीति या उनकी असाधारण सेवा–
   संत जैसा कहें वैसे और उनकी मरजी के मुताबिक मन, कर्म, वचन से करना।
2. **स्वामिनारायण भगवान का नाम लेने वाले का**
   या
   भगवान का स्वरूप 'साकार' मान कर भजन करने वाला कोई भी हो,
   उन सभी का केवल गुण ही देखना, गुण ही लेना
   और
   उद्धवजी जैसा दिव्यभाव व निर्दोषबुद्धि समग्र सत्संगीबंधुओं के प्रति रखना।
   समता और सुहृद्भाव दृढ़ करना।
   यूँ, नम्रभाव से, दिल की सच्चाई से दो हाथ जोड़ कर, संत जैसा कहें वैसा ही जो भी किया करे,
   उसे जीतेजी ही बिना किसी साधन किए, सरलता से ही अतिशय दुर्लभ 'एकांतिकभाव' सिद्ध हो जाता है।
   ऐसा 'गुणातीत ज्ञान' भगतजी महाराज ने असंख्य मनुष्यों के लिए सुगम कर दिया;
   इस हेतु उन्हें लाखों वंदन है - धन्यवाद है - धन्यवाद है।

– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज, 1957

[મૂળ ગુજરાતી]

બ્રહ્મસ્વરૂપ ભગતજી મહારાજ અને લક્ષાવધિ મુમુક્ષુઓ માટેની કલ્યાણ રીતિ

ગીતા, ભાગવત, ઉપનિષદો અને અન્ય શાસ્ત્રોમાં

પરમ ભાગવત એકાંતિક સંતના લક્ષણો અને એમના થકી સનાતન કલ્યાણનો સરળ માર્ગ દેખાડયો છે.

તેમજ મોક્ષનું અંતિમ દ્વાર ખુલ્લુ થવાનું રહસ્ય શ્રીજી મહારાજે

વચનામૃત પ્રથમ 54, મધ્ય 7-28-54, છેલ્લા 2, વરતાલ 5-11-53 વગેરેમાં સ્પષ્ટપણે બતાવેલ છે.

આ અંગે ભાગવતના એકાદશ સ્કંધના તેમજ બીજાં મુદ્દાના શ્લોકો વિચારવા,

જેમાં નીચેના બે મુખ્ય છે :

1. प्रसंगमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः।
   स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम्।।

(જીવને જેવો પોતાના સંબંધીને વિષે દૃઢ પ્રસંગ છે, તેવો ને તેવો જ પ્રસંગ જો ભગવાનના એકાંતિક સાધુને વિષે થાય, તો એ જીવને મોક્ષનું દ્વાર ઉઘાડું થાય છે.)

2. यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः।
   यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कर्हिचिज्जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः।।

(જેને વાત, પિત્ત અને કફરૂપ ત્રણ ધાતુમય શરીરમાં અને સ્ત્રીપુત્રાદિકમાં આત્મબુદ્ધિ છે, પાષાણાદિકની પ્રતિમામાં દેવબુદ્ધિ છે અને જળમાં તીર્થબુદ્ધિ છે; પણ જો એને એવી આત્મબુદ્ધિ ભગવાનના એકાંતિક જ્ઞાનીભક્તમાં નથી, તો તેને પશુઓમાં ખર જાણવો.)

આ જ મુદ્દા ઉપર ભાર મૂકીને,

'પ્રત્યક્ષ ભગવાન કાં તેના અવતાર અગર એકાંતિક સાધુ - પરમ ભાગવત સંતના પ્રસંગ થકી જ ભાગવત ધર્મનું—એકાંતિક ધર્મનું પોષણ, તેમજ જીવને મોક્ષનું દ્વાર ઉઘાડું થાય છે' એ વાત

શ્રી કૃષ્ણ ભગવાને ઉદ્ધવને, કપિલદેવ ભગવાને દેવહૂતીને

તેમજ શ્રીજી મહારાજે ભકિતમાતાને કરી છે.

તપ, ત્યાગ, વૈરાગ્ય અષ્ટાંગયોગ, આત્મનિષ્ઠા, સ્વધર્મ, બ્રહ્મચર્ય

કે

બીજાં કરોડો સાધનો કરતાં ય 'સત્પુરૂષના સમાગમને' જ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને ભાગવતમાં

બ્રાહ્મીસ્થિતિ પામવા માટે એકડારૂપે—મુદ્દારૂપે ભારપૂર્વક બતાવેલ છે.

સાચા સંતના પ્રસંગને જ **'સત્સંગ'** ગણાવ્યો છે, **'એકાંતિકી ભક્તિ'** ગણાવી છે.

વચનામૃત મધ્ય 59માં એવા સંતની પ્રાપ્તિને જ **'પરમપદ'** કે **'પરમ કલ્યાણ'** ગણાવ્યું છે.

પ્રગટ સંતના યોગ વગર આ અંતિમ રહસ્ય સમજાતું જ નથી

અને

દેહ છતાં બ્રહ્મરૂપ થઈ પરબ્રહ્મ પુરૂષોત્તમનારાયણ શ્રી સહજાનંદસ્વામીના દિવ્ય સ્વરૂપમાં

જોડાઈ શકાતું જ નથી

તેમજ

અંતિમ મુક્તિ કે પરમકલ્યાણ જે 'આત્યંતિક મોક્ષ'—એ સિદ્ધ થતો નથી.

અનંત પ્રકારનાં કલ્યાણ, આધ્યાત્મિક સ્થિતિઓ અને તેનાં સુખોના વર્ણન શાસ્ત્રોમાં છે.
પણ, છેલ્લો જન્મ કે જ્યાં
પ્રકૃતિ પુરૂષના કાર્યમાં મને સહિત માલ જ ન મનાય
અગર
દેહ છતાં જ સર્વેય વાસનાઓનો સંપૂર્ણ ક્ષય થઈ, પ્રકૃતિ કે સ્વભાવ બદલાઈ જઈ,
બ્રહ્મરૂપે પરબ્રહ્મમાં જોડાઈ જવાય- **એ મોક્ષ** સાધી શકતો નથી.
માટે ભગવાન કાં પ્રત્યક્ષ સાચા સંત થકી જ
કારણ અને મહાકારણના ભાવો સદંતર ટાળીને જે મોક્ષ થાય,
તે **'સંતમાર્ગ'** કેવી રીતે સરળતાથી- સુગમતાથી
અભણમાં અભણ તુચ્છ જેવા લાગતા જીવને માટે પણ પરમ સુગમ બન્યો
ને
અનાદિ મહામુક્તરાજ પ્રાગજી ભગતે એ કેવી રીતે સિદ્ધ કર્યો તે સમજીએ.
પરમ ભાગવત એકાંતિક સંતની કલ્યાણ રીતિ અપૂર્વ ને અનોખી જ પડી જાય છે.
યુગ ધર્મને સાથે રાખી,
લક્ષાવધિ મુમુક્ષુઓને ફક્ત પોતાના 'પ્રગટ' સંબંધથી જ, સેવા, સમાગમ અને પ્રસંગ થકી
એકાંતિક ધર્મ કેવી રીતે સદાને માટે ખુલ્લો મુકાયો છે
તે ભગતજી મહારાજના જીવનમાંથી જ આપણને જણાઈ આવે છે.
ગીતા, ભાગવત અને વેદાંતના મહાવાક્યોનાં રહસ્યો કે જે ગૂઢ જ રહેતાં
ને
વિદ્વાન બ્રાહ્મણો કે આચાર્યો સિવાય કોઈને સમજાઈ શકાતાં નહિ,
તે ગુજરાત અને કાઠિયાવાડના અભણ ગણાતા સાદા, ભલા ગામડિયાઓ પણ
તેમના પ્રસંગમાં આવતાં જ, તદ્દન સરળતા ને સુગમતાથી જીવનમાં ઉતારી શકતા.
આત્મા-પરમાત્માના સ્વરૂપોનું ઊંચામાં ઊંચું સાક્ષાત્ જ્ઞાન, અનુભવ
અને
તેમને રાજી કરવાની રીતિ મૂર્તિમાન કરી ને તત્ત્વજ્ઞાનને જીવંત બનાવી,
સમતા, સુહૃદ્ભાવ અને નિર્માનીપણાના મંગળકારી ભાવો પ્રકટાવી
દેહ છતાં જ સિદ્ધ કરી, તેઓ અન્યને પ્રતીતિ રૂપે દાખલા રૂપ બનતા, તે–
સર્વોપરિ સંતની અનોખી કલ્યાણ રીતિને જ આભારી છે.
બીજાં સંતોની રીત, જે અન્ય સાધનો ઉપર અવલંબે છે (આધાર રાખે છે)
કે
શ્રદ્ધા, તપ, યોગ, વગેરે કરાવી મોક્ષ પ્રાપ્તિનો માર્ગ
ગહન (ગૂંચવણ ભરેલો - અધરો - અકળ) બનાવે છે
ને
દેહ છતાં જ મોક્ષ થયાની પ્રતીતિ પણ આવતી નથી,
એ **'ક્રિયાસાધ્ય'** રીત કરતાં આ **'કૃપાસાધ્ય'** રીત લાખ્ખો મનુષ્યોને માટે સરળ પડે છે.

ભગતજી મહારાજના પ્રસંગો - એમનું અંગત જીવન સર્વને માટે દાખલા રૂપ છે.
ખરેખર પ્રશંસનીય ને અદ્વિતીય એવી આ જ રીતિ પરંપરાગત પ્રગટ સ્વરૂપો થકી
હજી પણ મોજુદ છે અને શક્ય છે.
પૂ. શાસ્ત્રીજી મહારાજ થકી એ રીતિ પ્રચલિત થઈ
ને
પ.પૂ. બ્રહ્મસ્વરૂપ યોગીજી મહારાજ પણ હજી તે મુજબ જ લક્ષાવધિ મુમુક્ષુઓ માટે
તેવું જ આત્યંતિક મુક્તિ માટેનું - સર્વને બ્રહ્મરૂપ કરી ભગવાનમાં જોડવાનું કાર્ય કરી રહ્યા છે.
આપણા સર્વના અતિમોટા ભાગ્યની આ વાત છે.
આ પળ, આ જોગ અને પ્રગટનો પ્રસંગ સમજાઈ જાય તો
અનંત જન્મનાં પાપ ઊડી જઈ, જીવ દેહ છતાં જ બ્રહ્મરૂપ થઈ શકે છે.
મહાવિષ્ણુરૂપ આવો અલૌકિક સત્સંગ
સાચા સંતની કૃપા વિના અને અંતરની અત્યંત તીવ્ર અભીપ્સા વિના સમજાતો જ નથી.
પરોક્ષદેવ, પ્રતિમાઓ ને મુક્તોમાં સર્વને પ્રતીતિ છે, પણ પ્રગટમાં રહેવી કે ટકવી અત્યંત મુશ્કેલ છે.
પણ, જો—પ્રત્યક્ષ ભગવાન કાં પ્રત્યક્ષ સાચા સંતમાં અનન્યનિષ્ઠા થઈ જાય તો
કેવળ સંબંધે જ જેતલપુરની વેશ્યાનું જેમ સદ્ગુરૂ મુક્તાનંદસ્વામી જેવું **‘કલ્યાણ’** થયું
અગર
શુકજી થકી જેમ પરીક્ષિતનો સાત જ દિવસમાં **‘મોક્ષ’** થયો,
તેમ જ ભગતજી મહારાજે અનુભવેલ ને સિદ્ધ કરેલ **‘ગુણાતીત એકાંતિક ધર્મ’** સર્વ માટે સરળ બન્યો છે.
સૌ કોઈને એ દેહ છતાં જ સુગમ થાય છે
અને
ધર્મ, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય, ભક્તિ અને મહિમારૂપી કલ્યાણકારી ગુણો જીવનમાં પ્રગટ થઈ
અન્યને પણ પ્રતીતિરૂપે લાગે છે ને ધામનું નિર્ગુણ સુખ પ્રાપ્ત કરાવે છે.
દરજીના દેહમાં રહી, તદ્દન નિર્માનીપણે વર્તી,
અનાદિ મહામુનિરાજ ગોપાળાનંદસ્વામીનો તેર વર્ષ સમાગમ કરી,
તેમના કહેવાથી જુનાગઢ અનાદિ મૂળ અક્ષરમૂર્તિ ગુણાતીતાનંદસ્વામીના પ્રસંગ થકી
આત્મા અને પરમાત્માનો, બ્રહ્મ અને પરબ્રહ્મનો, અક્ષર અને પુરૂષોત્તમનાં સ્વરૂપોનો સાક્ષાત્કાર
ભગતજી મહારાજે કર્યો
અને
સંતવર્ય **શાસ્ત્રીજી મહારાજ** જેવાને પોતાના જમણા હાથસમા ઉત્તમ સેવક માની, જ્ઞાનવારસો અર્પ્યો
અને
સ્વામીશ્રીજીના સાક્ષાત્ સ્વરૂપમાં જોડી દીધા.
તે વારસો આજ લક્ષાવધિ મનુષ્યો માટે સરળ ને સુગમ પડેલ છે તે જ આ સંતમાર્ગની વિશિષ્ટતા છે.
‘આશરે જ કલ્યાણ’ મનાવી,
‘જીવનમુક્ત દશા’ પ્રાપ્ત કરવા **ગુણાતીત જ્ઞાન** તેમણે સર્વ માટે સુગમ રીતે મૂક્યું.
આવા જ અનાદિ મુક્તરાજ આપણા જાગાસ્વામી પણ સૌરાષ્ટ્રમાં એ જ ગાળામાં

'ગુણાતીત જ્ઞાન' ફેલાવી રહ્યા હતા.
તેમના થકી પણ અનેક મુક્તોએ બ્રાહ્મીસ્થિતિ પ્રાપ્ત કરેલ છે.
આમ શ્રીજી મહારાજની જ જાણે બે આંખો-પ્રાગજી ભગત અને જાગાસ્વામી
લક્ષાવધિ મનુષ્યોના કલ્યાણ માટેનો સરળમાં સરળ માર્ગ બતાવી ગયા.
આજે તેની પુષ્ટિ સંતવર્ય યોગીજી મહારાજ આફ્રિકા, વિલાયત
તેમજ દેશમાં ગામો-ગામ ફરી કરી રહ્યા છે ને અખંડિત રાખી છે.
આમ શિક્ષાપત્રીના શ્લોકો 116, 121* પ્રમાણેની **(બ્રહ્મરૂપે વર્તતા થકાં સાધ્ય એવી) સાચી મુક્તિનો માર્ગ આપણને વગર પ્રયત્ને, વગર દાખડે કે સાધને કેવળ કરૂણાથી જ સંતની કૃપાથી સાંપડયો છે.**
તો, સર્વેએ તેની પુષ્ટિ જ કરવી અને ઊંચામાં ઊંચા આ તત્ત્વજ્ઞાનને સરળ બનાવી
તેમણે સૂચવેલ કલ્યાણની નિમ્ન રીતિ સર્વ સ્થળે પ્રગટાવવી;
જેથી સૌ કોઈ દેહ છતાં જ નિર્ગુણ સુખ પ્રાપ્ત કરી શકે.
આવા બ્રાહ્મીસ્થિતિવાળા સંતમાં સ્વામિશ્રીજી સમગ્રપણે પ્રગટ રહે છે.
શ્રીજી મહારાજ એમને સર્વ ક્રિયાઓ કરાવે છે. તેથી તે સર્વ મંગળકારી અને કલ્યાણકારી જ લાગે છે.
અંતરે શાંતિ, સુખ ને આનંદ અનુભવાય છે ને દોષનું દર્શન થઈ, તે ટાળવાનું બળ મળે છે.
સંતમાં અસાધારણ હેતે કરીને બ્રાહ્મીસ્થિતિ પામવાની આ રીતિ સર્વને પ્રાપ્ત થાય એજ અભ્યર્થના છે.

1. મહારાજ અને સ્વામીને અખંડ રાખનાર સાચા સંતને **'મોક્ષનું દ્વાર'** દઢપણે માનીને,
   એમાં સર્વોપરિભાવ લાવી અનન્યપણે જોડાઈ જવું.
   'હું સંતનો અને આ સંત જ મ્હારા જીવનપ્રાણ'—એમ માની શ્રીજી મહારાજનું સ્વધર્મે યુક્ત ભજન કરવું.
   એવા સંતમાં અસાધારણ પ્રીતિ
   અગર
   એમની અસાધારણ સેવા-સંત કહે તેમ ને તેમની મરજી મુજબ મન, કર્મ, વચને કરવી.
2. **સ્વામિનારાયણ ભગવાનનું નામ લેનારનો**
   કે
   ભગવાનનું સ્વરૂપ 'સાકાર' માનીને ભજન કરનાર કોઈ પણ હોય,
   તે સર્વનો ગુણ જ જોવો, ગુણ જ લેવો
   અને
   ઉદ્ધવજી જેવો દિવ્યભાવ અને નિર્દોષબુદ્ધિ સમગ્ર સત્સંગીબંધુઓમાં કેળવવી.
   સમતા ને સુહૃદ્ભાવ દઢ કરવો.
   આમ, નમ્રભાવે, અતિ સાચાભાવે બે હાથ જોડી સંત કહે તેમ કરનારને
   અતિશય દુર્લભ એવું એકાંતિકપણું વગર સાધને સરળતાથી દેહ છતાં જ સિદ્ધ થઈ જાય છે.
   આવું 'ગુણાતીત જ્ઞાન' ભગતજી મહારાજે લક્ષાવધિ મનુષ્યોને સુગમ કરી આપ્યું,
   તે બદલ તેઓને લાખો વંદન હજો, ધન્ય હજો, ધન્ય હજો.

— ***બ્રહ્મસ્વરૂપ કાકાશ્રી,*** *1957*

* *પોતાના જીવાત્માને સ્થૂળ, સૂક્ષ્મ અને કારણ દેહથી જુદો જાણી, શ્રી કૃષ્ણ ભગવાનની સર્વદા* ***'બ્રહ્મરૂપે'*** *ભક્તિ કરવી—116*
અમારો ***'મત'*** *વિશિષ્ટાદ્વૈત છે, અમારૂં પ્રિય* ***'ધામ'*** *ગોલોક છે અને એ ધામમાં શ્રીકૃષ્ણ ભગવાનની* ***'બ્રહ્મરૂપે'*** *સેવા કરવી એને અમે* ***'મુક્તિ'*** *માની છે—121*

प्रगट ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामिजी का माहात्म्यसभर भक्ति महोत्सव !

'काकाजी ने हमें यह मंदिर बनवा दिया था !'

रहन-सहन, सादगी, नियम-धर्म और सेवा से जूनागढ़ी संतों की झांकी करवाते, **'सांकरदा'** मंदिर में बिराजते **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** एवं उनके संतों के उपरोक्त उद्‌गार एहसास कराते हैं कि हमें नींव की विभूतियों को कभी भी भूलना नहीं चाहिए ! सो, **14 व 15 फरवरी 2016 – 'प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी'** का **'भक्ति महोत्सव'** एक प्रकार से ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने का एक अवसर था...

14 फरवरी – वॅलनटाईन डे को संतभगवंत प.पू. साहेबजी द्वारा दिए गए नाम–**'संतप्रीति दिन'** की दोपहर 4:00 बजे, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की **'रजत तुला'** हेतु, सभी सांकरदा मंदिर के सामने बने सभामंडप में एकत्रित हुए। संत भगवंत प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. भरतभाई के प्रवेश के बाद, गरुड़ आकार के स्वसंचालित रथ पर विराजमान होकर, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने पंडाल में प्रवेश किया। संतों ने गुणातीत स्वरूपों को हार अर्पण करके उनका स्वागत किया। पू. निष्कामजीवनस्वामिजी के प्रास्ताविक उद्‌बोधन एवं पू. इलेशभाई के मधुर कंठ से पवई मंदिर के भाइयों द्वारा रचित भजन के पश्चात, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी गुरुहरि पप्पाजी की प्रासादिक तुला के एक पलड़े में विराजे। सर्वप्रथम गुणातीत स्वरूपों ने सूखे मेवे के पॅकेट्स तुला के दूसरे पलड़े में रख कर कार्यक्रम की शुरुआत की। तत्पश्चात् सभी केन्द्रों से आए संतों, मुक्तों एवं महानुभावों ने क्रम से सूखे मेवे के पॅकेट्स रख कर भक्ति अदा की। कलात्मक हार के रूप में सांकरदा-**अक्षरज्योत** की बहनों की भावना ग्रहण करने बाद, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी तुला के पलड़े से उतर गए। पवई, शिकागो एवं दिल्ली केन्द्र की ओर से प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को रजत हार अर्पण किया। पू. सुहृद्‌स्वामी ने मुकुट पहना कर अद्‌भुत दर्शन कराया। और... रजत तुला के आरंभ होने से पूर्व प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने, प.पू. साहेबजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की स्थूल अनुपस्थिति के कारण, तत्स्वरूप प.पू. कोठारीस्वामिजी को रजत हार अर्पण किया। सांकरदा के पू. अक्षरप्रियस्वामी, पू. ब्रह्मानंदस्वामी द्वारा स्वर्ण सिक्कों के अर्पण से रजत तुला का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात्, क्रम से सभी केन्द्रों के मुक्तों ने रजत अर्पण किया और करीब दो घंटे में तुलाविधि संपन्न हुई।

इस विशिष्ट आयोजन के अंत में प.पू. गुरुजी, प.पू. साहेबजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी द्वारा निम्न आशीर्वाद दिए गए...

* प.पू. गुरुजी *

...हम बोलते हैं दिल्ली हमारा, ब्रह्मज्योति साहेबजी का, हरिधाम स्वामिजी का – पर, काकाजी कहते कि ऐसी कोई डिमार्केशन नहीं होनी चाहिए। 83 या 84 की बात है, काकाजी लंदन में थे। वहाँ से उन्होंने पंद्रह-बीस

हज़ार रुपये दिल्ली भेजे थे और कहलवाया था कि यह राशि मुंबई - भरत को भेज देना। उस समय हमें पैसे की बहुत जरूरत थी। इस बारे में मैंने काकाजी से ट्रंककॉल से बात भी की कि ऐसी बात है। ***काकाजी*** *ने तुरंत कहा कि भले तुम रख लो और अगले ही दिन उन्होंने काग़ज़ भी लिखा –*

मैंने तो सब कुछ साझा माना है। जहाँ जैसी - जिस वक़्त ज़रूरत। हमें तेरा - मेरा नहीं रखना।

उस काग़ज़ के अंत में उन्होंने लिखा –

ऐसी सर्वदेशीयता से तुम तैयार हो जाओ और दूसरों को भी करते जाना।

मैं कितने समय से देख रहा हूँ कि अक्षरविहारीस्वामिजी इस कार्य में जुट गए हैं। इस बारे में उन्होंने मुझसे दिल्ली में बात भी की थी, तो मैंने उनसे कहा था कि इस बात के लिए मैं बहुत छोटा हूँ, आप बड़े यह बात उठा लें, ताकि हमारे गुणातीत समाज की एकता व अखंडितता बरकार रहे... साहेब आज ऐसे आशीर्वाद दें कि हम में रही - सही ऐसी कोई कसर हो, जिससे आपस में थोड़ा - सा भी अंतराय रहता हो, वह भी टल जाए। हम काकाजी को ठंडक प्रदान कर सकें...

जैसे कि निष्कामस्वामी ने बात की कि भले ही समाज छोटा है या आर्थिक रूप से संपन्न नहीं हैं, लेकिन सभी ने स्वामी के प्रति भाव रख कर चाँदी की जो सेवा की, इस हेतु स्वामी ऐसे आशीर्वाद दें कि मोतियों की ऐसी बरसात हो कि सभी तन, मन, धन एवं आत्मा से सुखी हों...

अभी जब रजत तुला चल रही थी, तब भरतभाई से कोई पूछ रहा था कि दो किसान आपस में मिलें, तो एक-दूजे से पूछेंगे कि फसल कैसी है। दो व्यापारी आपस में मिलें, तो पूछेंगे कि काम - काज कैसा चल रहा है ! हमें आपस में क्या पूछना चाहिए ? मैं इस बारे में सोचता रहा, फिर सूझा कि हम एक - दूजे से पूछेंगे कि अंतर में शांति है न। अंतर से सुखी हो न !! तो आज स्वामी और साहेब से प्रार्थना कि वे खुले हाथ से आशीर्वाद दें कि सभी सदैव - सर्वथा सुखी हो जाएँ...

* संतभगवंत प.पू. साहेबजी *

... ***योगीजी महाराज*** *का लक्ष्य था पढ़े-लिखे 51 साधु बनाना। उन* ***की तपस्या और संकल्प से जो-जो साधु हुए, आज हम देखते हैं कि वे सब सोने जैसे संत बन गए, जो ख़ुद तो प्रभु में लीन रहते ही हैं और अन्य सबको प्रभु से जोड़ कर 'स्थिति' कराएँ ऐसे हैं।*** *इन 51 संतों में बापा ने पाँच को सद्‌गुरु बनाया... उनमें अक्षरविहारीस्वामिजी भी एक थे... 'गुणातीत' का गुण है – 'दासत्वभक्ति' और आज देखें तो* ***अक्षरविहारीस्वामिजी 'दासत्व' का मूर्तिमान स्वरूप हैं।*** *प्रभुधारक संत हैं, लेकिन ऐसा मानते हैं कि मैं कुछ नहीं... उन्हें बापा, काकाजी और पप्पाजी से एक समान प्रेम था, प्रभु के भाव से सेवा - भक्ति की तो, बापा, काका और पप्पा रूप बन गए। जैसा कि गुरुजी ने कहा – इस उत्सव में जिस - जिसने तन, मन, धन से साथ दिया है, उनके अंतर में परम शांति - परम आनंद सदा बहता रहे और वे सभी समृद्धिवान बनें – ऐसे आशीर्वाद बरसाना...*

* प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी *

...जिन्होंने साधुतायुक्त तपस्वी जीवन जिया - खूब कसनी सहन की, ऐसे योगीजी महाराज जब शास्त्रीजी महाराज के साथ हाथी की अंबारी पर बैठे, तब योगीजी महाराज ने कहा कि मेरा अब तक का जो तप था, वह पूरा हो गया। इसी प्रकार अभी जो ***रजत तुलाविधि हुई, उससे महाराज द्वारा मुझे बख़्शिश मिले दासत्व के अंग की पूर्णाहुति हो गई।*** *दासत्व कहाँ रहा ? तो, इस अक्षरधाम की सभा में मेरे लिए सभी भजन करना कि मेरा दासत्व का अंग वैसा का वैसा रहे।* ***'संप, सुहृद्‌भाव, एकता' – जो काकाजी-पप्पाजी का मूलभूत सिद्धांत था, वह पूर्ण करने के लिए हर एक जगह सेवा करके हम आत्मीय बनें... जब तक ज्ञान वर्तन में न आए, तब तक सब कुछ निकम्मा है। सबने ज्ञान खूब सुना और जाना, पर अब ज्ञान की ज़रूरत नहीं, वर्तन की ज़रूरत है। उस वर्तन हेतु हमें अपने आप को भूलना है...*** *यदि आपस में आत्मीयता होगी, तो अपना कुछ आड़े नहीं आएगा और अपना सब कुछ छोड़ सकते हैं। हम अपनापन छोड़ेंगे, तो अन्यों के आत्मीय बन सकेंगे। मेरा अपना निजी, तेरा-मेरा – यह नहीं चलेगा।* ***दूसरे का वर्तन, रीति, प्रकृति मान्य रहे, तभी हमने अपना छोड़ा कहा जा सकता है।*** *इस प्रकार वर्तेंगे तो एक-दूजे के सुहृद् बन सकेंगे। ऐसा सुहृद्‌भाव बढ़ाएँगे, तो सुख, शांति और आनंद तो जैसे बापा कहा करते थे – अपने घर में है। पप्पाजी ने सूत्र दिया था – सुखी होने में कहाँ देरी है; संप, सुहृद्‌भाव और एकता रखो...*

अगले दिन **15 फरवरी – प्रगट ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामिजी** के **81वें प्राकट्य पर्व – भक्ति महोत्सव** की मंगल प्रभात आई, और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेने के लिए, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्त आतुरता से उपस्थित हुए। सुबह करीब 10:00 बजे, **'अक्षरधाम की दिव्य सवारी'** की प्रतीति कराते, फूलों से सुसज्जित दो रथों में विराज कर, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई ने सभामंडप में प्रवेश किया। सांकरदा मंदिर के संतों-मुक्तों ने प्रत्यक्ष स्वरूपों का पुष्प हार से स्वागत किया। पू. ब्रह्मानंदस्वामी, पू. कौशिकभाई देसाई, पू. बिम्पलभाई, पू. दिलीपभाई भोजाणी, पू. दिनकरभाई देसाई जैसे संतों-मुक्तों ने स्वानुभव प्रकट करके आशिष याचना की। सभी केन्द्रों द्वारा प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को हार एवं स्मृति भेंट अर्पण किए गए। कई मुक्त रजत तुला में उपस्थित नहीं थे, सो प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं पू. सुहृद्‌स्वामी ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को पुनः चाँदी का हार व मुकुट अर्पण किए एवं पू. राकेशभाई ने भगवी शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया। भक्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में **'अक्षरधामनी सवारी'** भजनों की ऑडियो सी.डी. एवं **'अक्षरना तेज भाग-2'** का अनावरण किया गया। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई (शिकागो), प.पू. शांतिभाई साहेब एवं प.पू. भरतभाई के आशिष से अंतर में बल पाकर सभी कृतार्थ हुए - उत्सव की निम्न फलश्रुतियाँ प्राप्त कीं–

* प.पू. भरतभाई *

*...**स्वामिजी ने कभी किसी का कुछ देखा नहीं। स्वामिजी की हमेशा महिमा की दृष्टि रही है।** कोई भी छोटे से छोटा प्रसंग हो, उनके अंतर से माहात्म्य के सिवा अन्य कोई बात निकलती ही नहीं... गुणातीत*

पुरुष हमारे अंतर का बदलाव करते हैं; हमारे अंतर में भावना जाग्रत करते हैं। कल ***गुरुजी ने बहुत अच्छा मांगा कि हम अंतर से सुखी हों...***

* प.पू. दिनकरभाई *

...इन पुरुषों के पास ऐसी जबरदस्त ताक़त है कि प्रसंगों द्वारा हमें आगे ले जाते हैं। ***अक्षरविहारीस्वामिजी से ख़ास प्रार्थना–आप खूब समर्थ हो,*** *आपकी भावना और संकल्प हमेशा दिव्य रहता है। आपने वर्षों पहले कहा था कि योगीबापा कहते कि जगत का संकल्प करें, वह पाप है। तो, स्वामी आप तो जगत का संकल्प करने वाले हो नहीं। आप हमारे लिए* ***ऐसा संकल्प करना कि काकाजी - पप्पाजी की शताब्दी का यह वर्ष, आने वाला वर्ष और उससे आगे वाले वर्ष ऐसे भक्तिभाव से मनाएँ...***

* प.पू. शांतिभाई साहेब *

...आज स्वामिजी का प्राकट्य दिन मना रहे हैं। वे एक ऐसे दिव्य पुरुष हैं कि उन्होंने संकल्प के बल से अनेक चैतन्यों के जीवन में प्रकाश किया है - उन्हें भक्ति के मार्ग पर चलाया है। योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी के स्वरूप का दर्शन भलीभांति कराया है। सभी स्वरूपों के प्रति दासत्व की भावना - साधना जीवनभर उनमें रही है। संबंध वाले की सेवा सर्वोपरिभाव से कर लें, यही निशान रख कर वे प्रति पल जिए हैं... ***मुझे मिला स्वरूप यदि अक्षरपुरुषोत्तम का साक्षात् स्वरूप माना गया है, तो ऐसे मुक्तों का दर्शन होना कोई सामान्य बात नहीं है, वे तो बहुत ऊँची - जबरदस्त आत्मा होती हैं...***

स्वामिजी, *आपके चरणों में इतनी प्रार्थना है कि आप जिस दासत्वभाव से जिए हो, संबंध वालों की सेवा में अखंड प्रवृत्त रहे हो, सभी को दिव्य बनाया है... ऐसी प्राप्ति करने की झंखना सभी के हृदय में है।* ***सभी को जो स्वरूप मिला है, उनके प्रति सम्यक् निर्दोषभाव दृढ़ हो जाए और 'स्वामिनारायण' के संबंधमात्र से मस्तक झुक जाए - सेवा करने की आतुरता रहे – ऐसी परम स्थिति हमें प्राप्त करवाओ –*** *ऐसी प्रार्थना!*

* संतभगवंत प.पू. साहेबजी *

...संस्था से विमुख हुए पचास वर्ष पूरे हो रहे हैं... योगीजी महाराज को प्रभु का स्वरूप मान कर, उनकी आज्ञा से सब साधु बने थे। दादर मंदिर में अच्छी तरह रहते - संस्कृत पढ़ते थे। ***एक साथ चालीस संतों को सोखड़ा के पुराने मंदिर में आकर रहना हुआ!! उनका दिल तनिक भी विचलित नहीं था कि क्या होगा - कैसे होगा?***

...कइयों को घर लौटने का चान्स था, लेकिन नहीं, अपने इष्टदेव को राज़ी करने के लिए क्या नहीं हो – ऐसी भावना थी। उसके लिए हरिप्रसादस्वामिजी और अक्षरविहारीस्वामिजी की लीडरशिप को धन्यवाद है कि इतने माहात्म्य में सबको सराबोर रखा। *बापा के प्रति तनिक भी मायिकभाव न आए, ऐसे माहात्म्य का सिंचन किया...* ***संतों की दिव्यता से शून्य में से सर्जन हुआ। बापा के प्रति***

अक्षरविहारीस्वामी को सम्यक् निर्दोषभाव और काकाजी-पप्पाजी के प्रति भी वैसा ही भाव ! *आपस में संतों के प्रति भी ऐसा ही भाव। फिलहाल वे भक्तों के प्रति भी प्रभु का भाव रख कर वर्तते हैं। इसीलिए उन्हें प्रभु का स्वरूप कहते हैं।* ***आप और मैं सामने वाले व्यक्ति को देख कर वर्तते हैं, लेकिन ये व्यक्ति में निहित परमात्मा को देख कर वर्तते हैं-प्रेम करते हैं। इसलिए सच्चे अर्थ में 'प्रभु का स्वरूप' हैं।*** *गुणातीतभाव को पाए हुए साधु ही ऐसा कर सकते हैं। उनके सान्निध्य में रहें तो जीवन कैसा सुधर जाए, वो बिम्पल ने बताया। ऐसे साधु के साथ रहने, घूमने और उन्हें नज़दीक से निहारने से हमें उनकी महानता, दिव्यता, सरलता, सुहृद्ता इत्यादि गुणों का दर्शन होता है...*

* प.पू. गुरुजी *

...सुबह शाही सवारी में हम आ रहे थे, तब साहेब ने कहा–समाज में एक-दूसरे के प्रति महिमा बढ़ी है। सो, 'संप-सुहृद्भाव और एकता' रखने के लिए बहुत कठिनाई नहीं पड़ेगी, सहज ही रहने वाली है। मैं भी उसी विचार में था... यहाँ उत्सव से ज़्यादा शिविर का माहौल बन गया! काकाजी के मुख से कई बार सुना है–

कोई कहेशे आ संत तो बहु सारा रे, खरा कल्याणना करनारा रे। एटलो ज गुण कोई लेशे रे...

फिर रुक कर कहते–एटलो ज गुण कोई 'हैयामां' लेशे रे ते तो ब्रह्मलोक जई पुगशे रे...

मैंने एक बार काकाजी से पूछा–आप (हैयामां) 'दिल' में क्यों कहते हैं, 'भेजे' में क्यों नहीं?

काकाजी बोले–हैयामां एटले? हृदयमां... हृदय क्या काम करता है?

मैंने कहा–पूरी बॉडी में ब्लड सरक्यूलेट करता है।

फिर उन्होंने पूछा–उससे क्या होता है?

मैंने कहा–उससे सारे ऑरगन्स एक्शन में आते हैं।

वे बोले–मैं यही कहता हूँ कि खाली गुण गाया करो-लिया करो, ऐसा नहीं। हृदय में आने दो, तो एक्शन में आएगा।

कितना सायन्टीफिकली उन्होंने समझाया! इसी प्रकार ***हम अक्षरविहारीस्वामिजी के गुणगान भले गाया करें, लेकिन उसके मुताबिक चलें, तो ही हमें वह प्राप्ति होगी। स्वामी ने कभी भी किसी के स्वभाव, प्रकृति, दोष नहीं देखे। उनके लिए सब सहज...***

एक बार मेरे जन्मदिन पर पप्पाजी ने आशीर्वाद लिख कर भेजा कि दिल्ली के मुक्तों के चैतन्यों की जवाबदारी तुमने ली... मुझे तब विचार आया कि मुझे अपनी स्वयं की आत्मा का दर्शन ही नहीं। मुझे कुछ ख्याल पड़ता हो, तो किसी से कुछ कहूँ न? सो, मैंने पप्पाजी को काग़ज़ लिखा कि पहले तो मुझे अपने चैतन्य का दर्शन हो, तभी कुछ बरकत आएगी, और फिर किसी अन्य के चैतन्य की बात होगी। यह पढ़ कर पप्पाजी ने चार पन्नों का एक काग़ज़ मुझे लिख कर भेजा। उसमें से मैं थोड़ा पढ़ता हूँ, जिससे ख्याल आएगा कि क्या करना है और क्या नहीं करना है।

यह काग़ज़ 1995 में लिखा था–

तुम्हारे अंतर की इच्छा और अभीप्सा दर्शाता पत्र पढ़ा। पढ़ कर मेरे जितना खुश कोई नहीं होता होगा। ***अब तुम्हें आत्मा का दर्शन – तुम्हारा और दूसरे का करना है, साधना की पूर्णाहुति करना चाहते हो और सच में यदि तुम्हें सौ प्रतिशत उसकी लगन हो, तो मैं तो तुम्हें पहले से कहता आया हूँ कि गरज से गधे को बाप कहो...*** *फलां ऐसा करता है, फलां वैसा करता है, यह सब तू देखना छोड़ दे, वो काकाजी खुद देख लेंगे।*

...हम दूसरों की प्रकृति-स्वभाव देखते हुए और वैसा अभिप्राय बाँध कर उनके साथ वर्तते हैं। जहाँ हमें जँचता होगा, वहाँ अनरिज़र्वेड्ली वर्तेंगे, उसके पास बिलकुल खुले-कोई रिज़र्वेशन नहीं। *और...* ***तनिक भी डिफरन्स ऑफ ओपीनियन वाला आया हो या उसकी प्रकृति हमें जँचती न हो, तो उसके आते ही बात बंद। वहाँ 'स्वधर्म' की आड़ ले लेंगे।*** *जब तक ऐसा व्यवहार करेंगे, तब तक अपनी और दूसरे की आत्मा कैसे दिखाई देगी ? हमारा अपना स्वभाव-प्रकृति ही रिफ्लेक्ट होता रहेगा। हँसना और आटा फाँकना, दोनों एक साथ कैसे हो सकते हैं ? यदि हमें आत्मदर्शन करना ही हो, तो महाराज के संबंध वाले किसी का भी दोष मन पर लें ही नहीं, दिखाई तो देंगे ही।* ***जब तक वो दोष अपने भीतर होगा, तब तक दूसरे में वो दिखाई देगा ही। लेकिन, हमारे दोष या स्वभाव टालने का एकमात्र उपाय भी यही है*** *और इसे अपनाएँ।* ***किसी के दोष भले दिखाई दें, पर उसे लिफ्ट नहीं दें। लॅट गो... वो जानें-काकाजी जानें।*** *अपनी पसंद के व्यक्ति के साथ कैसे अनरिज़र्वेड्ली वर्तते हैं ? पर, ऐसा भाव हर एक के प्रति रहे,* ***तब हम 'चैतन्यदर्शी' बन पाएंगे।*** *तो, यह बात पकड़े रखना। इस हेतु मैं रोज़ तुम्हारे लिए भजन करता हूँ, क्योंकि तुम्हारे प्रति मुझे हेत और प्रेम है... तो, मेरा कहना है कि* ***स्वामी का हम दिल से यह गुण लें और दिल में गुण लिया होगा, तो सहज ही उनके जैसा दासभाव अपनेआप आ जाएगा...***

✻ प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ✻

...मेरी ऐसी झंखना–भावना है कि 'संप, सुहृद्भाव, एकता' के नाते, बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव में काकाजी–पप्पाजी का ऋण चुकाने के लिए अनुपम मिशन, गुणातीत ज्योत, सोखड़ा, दिल्ली, पवई सभी केन्द्रों की सेवा करनी है...

महिमा है–सब कुछ है, लेकिन हमारा एक-दूसरे के साथ निकट का नाता होना चाहिए... भिन्न केन्द्रों के साथ हमारी आत्मीयता हो जाएगी, तो काम सरल हो जाएगा... *पप्पाजी ने कहा है कि माहात्म्य वही – 'परमपद और पूर्णाहुति!' तो,* ***यह पूर्णाहुति हमें करनी है।*** *इस वाक्य का साक्षात्कार करना है। इस हेतु सारे गुणातीत समाज की सेवा करनी है... ऐसी मेरी अरज है, आप सभी स्वीकारो...यही काकाजी-पप्पाजी के प्रति श्रद्धांजली है...*

✡✡✡

व्रतोत्सवसूची

1.	**दि. 7.3.'16,**	**सोमवार**	–	**महाशिवरात्रि**, व्रत *(दिल्ली मंदिर में सुबह 9:00 बजे 'लघुरुद्र')* **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**
2.	दि. **9.3.'16,**	**बुधवार**	–	**प.पू. गुरुजी की 79वीं प्राकट्य तिथि (फाल्गुन शुक्ल-1)**
3.	**दि. 13.3.'16,**	**रविवार**	–	**प.पू. गुरुजी का 79वाँ प्राकट्य दिन, ताड़देव मंदिर में प्राकट्योत्सव सायं 5:00 बजे से...**
4.	दि. 19.3.'16,	शनिवार	–	एकादशी – व्रत
5.	दि. 22.3.'16,	मंगलवार	–	होली, होलिका दहन, **ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज की जयंती**
6.	दि. **23.3.'16,**	**बुधवार**	–	धुलेन्डी, **संतभगवंत प.पू. साहेबजी का अमृत पर्व**
7.	दि. **24.3.'16,**	**गुरुवार**	–	दिल्ली मंदिर में **धुलेन्डी का चंदनोत्सव – सुबह 9 : 00 बजे से...**
8.	दि. 4.4.'16,	सोमवार	–	एकादशी – व्रत
9.	दि. 8.4.'16,	शुक्रवार	–	चैत्री नूतन वर्षारंभ, 'गुडी पड़वा' - नीम के रस का प्रसाद
10.	दि. 15.4.'16,	शुक्रवार	–	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
11.	दि. 17.4.'16,	रविवार	–	एकादशी – व्रत
12.	दि. 19.4.'16,	मंगलवार	–	गुरुहरि योगीजी महाराज का भागवती दीक्षा दिन
13.	दि. 22.4.'16,	शुक्रवार	–	पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती
14.	दि. 3.5.'16,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
15.	दि. 9.5.'16,	सोमवार	–	अखात्रीज
16.	दि. 10.5.'16,	मंगलवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
17.	दि. 17.5.'16,	मंगलवार	–	एकादशी – व्रत
18.	दि. 20.5.'16,	शुक्रवार	–	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
19.	दि. 1.6.'16,	बुधवार	–	एकादशी – व्रत गुरुहरि पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन
20.	दि. 2.6.'16,	गुरुवार	–	**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की जयंती प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि**

Statement about ownership and other particulars about newspaper —
'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Date: 05 March, 2016 Signature of Publisher

शुरू-शुरू में आपने खूब आनंद करवाया है; तभी तो निभ गया !
– प.पू. गुरुजी

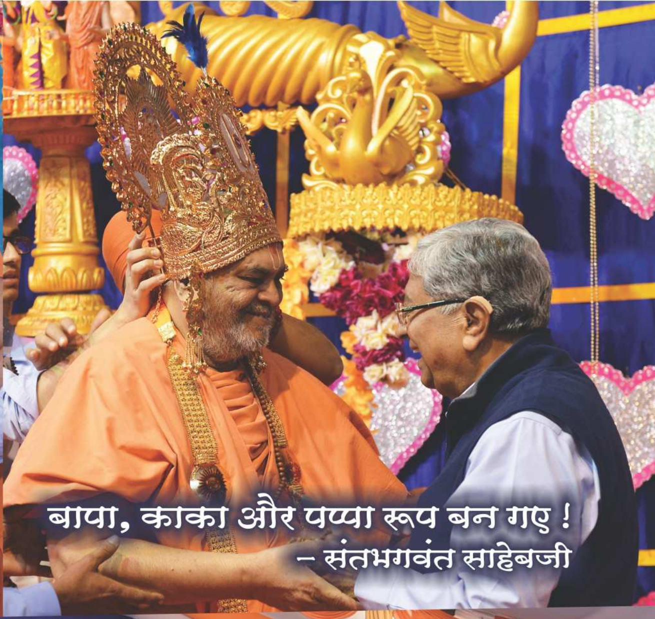

बापा, काका और पप्पा रूप बन गए !
– संतभगवंत साहेबजी

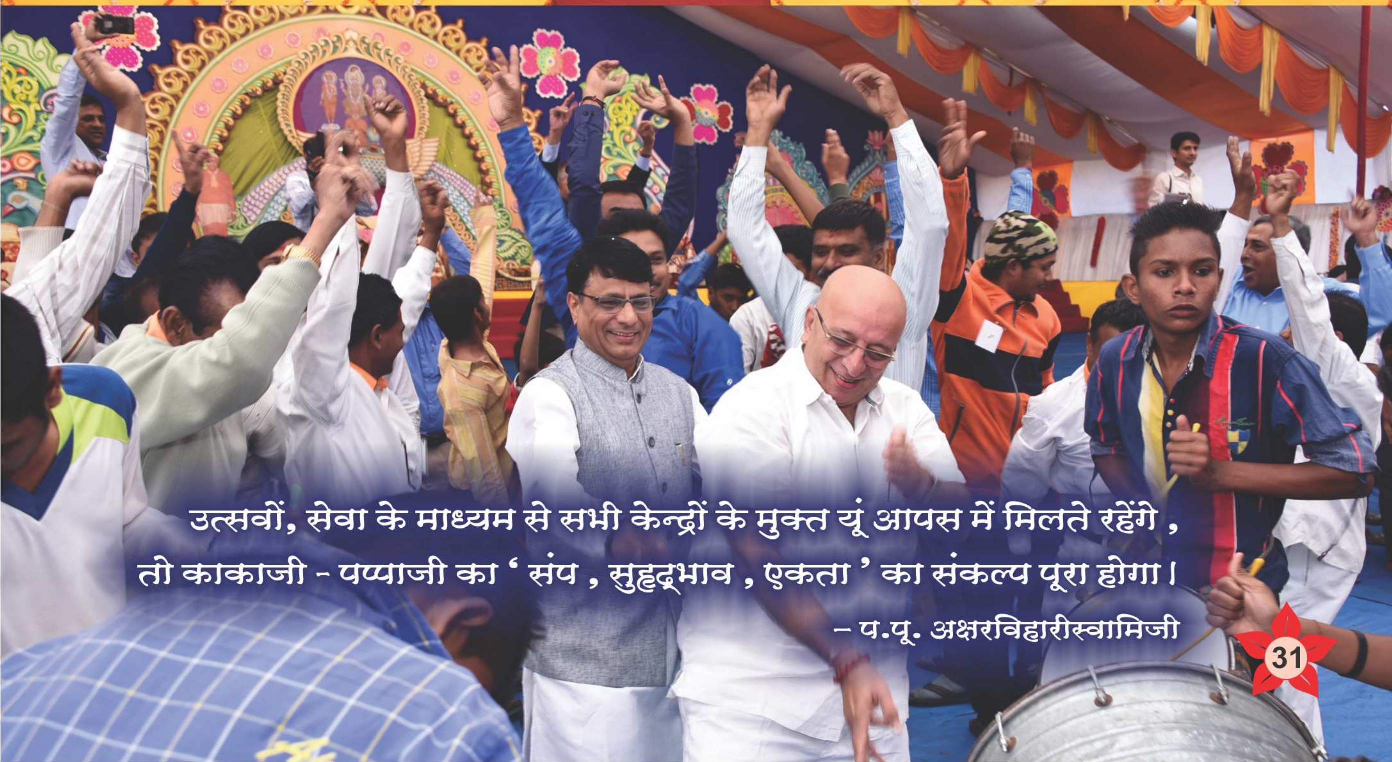

उत्सवों, सेवा के माध्यम से सभी केन्द्रों के मुक्त यूं आपस में मिलते रहेंगे ,
तो काकाजी - पप्पाजी का ‘ संप , सुहृद्‌भाव , एकता ’ का संकल्प पूरा होगा।
– प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

निमंत्रण

जय स्वामिनारायण!

आओ-आओ, 'ताड़देव' परिसर में सपरिवार मित्रमंडल सहित आओ,

13 मार्च 2016–रविवार की सायं 5:00 बजे से,

प.पू. गुरुजी का 79वाँ प्राकट्य दिन,

आगामी 'बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव' की प्रतीक्षा में

'योगी परिवार' के ज्योतिर्धरों की निश्रा में मना कर,

भक्ति अदा करने का मौका लूट लें!

* विशेष महत्त्व की बात *

आजकल हर व्यक्ति मानो दौड़-सा रहा है। भागदौड़ के ऐसे माहौल में दुर्घटनाएँ सहज ही होती हैं। ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज अकसर कहते–

कोई भी कार्य प्रभु के नाम का नमक डाल कर करो।

गुणातीत समाज से जुड़े **सभी आत्मीय मुक्तों-हरिभक्तों** से नम्र निवेदन, विनती, प्रार्थना या आख़िरकार कहिए कि आज्ञा है–

★ **कहीं से भी बाहर निकलने से पूर्व, प्रभु से साथ चलने की प्रार्थना करके ही कदम बढ़ाएँ।**

★ **सरकार की कड़ी पाबंदी भले ही न हो, लेकिन स्कूटर, बाइक या स्कूटी पर दूर या पास ही कहीं भी जाने वाले मुक्त (पीछे बैठने वाले भी) हॅल्मेट, और वो भी ISI मार्क वाला, पहन कर ही बैठें।**

इसी प्रकार–

★ **गाड़ी में भी चालक एवं साथ वाली सीट पर बैठने वाले–यानि दोनों मुक्त सीटबेल्ट अवश्य लगा कर बैठें।**

हमारी इस बात को मान कर आप हमें अपनी ओर से निश्चिंतता प्रदान करें...

'सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु-मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात्' की शुभेच्छा के साथ

हमारे गुरुजी के जय स्वामिनारायण।

सूचना

'भगवत् कृपा' से लाभांवित होते सभी मुक्तों से

वार्षिक चंदा – भारत के लिए **₹ 111** एवं **विदेश** के लिए **₹ 555** भेजने की नम्र विनती है।

यदि अब तक कुछ भी चंदा न दिया हो तो एक ही बारी **कम से कम ₹ 551** भेज कर,

2015 तक का पिछला सारा बकाया भी आप पूरा कर दें।

R.N.I. 28971/ 77 ***(Air Mail)***

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052